खद्दी

(सरहुल)

SH30

डॉ. नारायण भगत

खद्दी

(सरहुल)

ख़द्दी

(सरहुल)

डॉ. करमा उराँव
को
आदर भेंट

लेखक

डॉ. नारायण भगत

झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-85595-59-2

प्रथम संस्करण : 2012
द्वितीय संस्करण : 2016

सर्वाधिकार © : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा
दुकान न.– डी. जी. 03, न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,
रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001
मो. 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

अजिल्द : 150.00
सजिल्द : 300.00

KHADDI : SARHUL
by Dr. Narayan Bhagat

एड़ कत्था

ख़द्दी अरा करम भारत राजी ता कुँडुख़र गहि अकय महबा जोगे परब तली। ई परबन कुँडुख़र अरा नन्ना आदिवासीर हूँ महबा संगे मननर। ख़द्दी पत्त नू पुरखर गही घोख र'ई का एकासे बेंज्जा मंज्जका ख़ोख़ा मेत्त-मुक्का गहि ख़द्द-खर्रा मन्ना अरा पर्दना की उज्जना-बिज्जना अरा उल्लन खेपना मनी, आलेखम ख़ेख़ेल अरा बीड़ी गहि बेंज्जा मंज्जका ख़ोख़ा ख़ेख़ेल राजी नू सौंसे आलो अरा जिया जौंत गहि कुन्दुरना सृजन मन्ना मनी। इदिगेम पुरखा धरम नेग-चालो नन्नादिम परब तली। ख़द्दी परब : उइना ख़ोतना मंज्जका ख़ोख़ा चाँख़ना इदना गही बेड़ा अंड़सी अदिगे दव चेंप पुंइना चाड़ र'ई। ख़द्दी परब दव चेंप ने'अना, दवती सृजन मन्ना, कुन्दना अरा पर्दना खतरी दव धरम नेग नन्ना गहि परब तली। इदिगेम धर्मेस, बीड़ी बेलासिन अरा चाला पच्चोन गोहरारना मनी।

अन्नेम करम परब नू पुरखर गहि तिंगका ख़ीरी नाम कुडुख़ारिन दव नलख ननागे अरा धरम डहरे नू एकागे ब'ई। मुंधता पुरखर ख़ीरीन मुरूख दिगहा तेंग्गा लगियर, उंदुल नू मल मुंजर'आ लगिया, ओन हपता, पेठ बेसे लगा लगिया। औंगेम पुरखर उर्मी परब तिहार ता ख़ीरी डण्डी गुट्ठिन कपड़े मेद्दो नुम उइका रहचर। मुन्दा अकुन्ता पढ़च्का-लिखिच्का लूरगर ओर्मा ख़द्दर टी.वी., रेडियो, मोबाईल, लैप टोप गुट्ठि नू चोपारका र'अनर अंवगे पुरखर गही ख़ीरी डंड्ठिन मेनागे बेड़ा दिम मल्ला। पच्चो-पचगिर हूँ ख़ीरिन मोधरर केरर, ने तेंग्गो? अंवगेम एंग्हय घोख नू बरचा का ख़द्दी अरा करम ख़ीरी संगेम एंड़ो साहे ता डण्डी टूड़ना अकय चाड़ र'ई। पद्दा-ख़ेप्पा अरा राजी-राजी नू मेञ्जका गुनचका ख़ोख़म ख़द्दी अरा करम ख़ीरी टूड़ा लगदन। आसे र'ई ओर्मर गे दव लग्गो अरा एम्बा सारओर। नीकइम इदि पत्त नू अम्बर्रका कत्थन जोड़आ बेद्दोर होले ख़ोख़ा नू एन तंगआ ख़ीरी नू पुनाती जोड़आगे चिहुट ननोन। डण्डी गही पत्त नू पुरखर गहि ब'अना र'ई का कुँडुख़र गहि इतिहास बरनिका डंड्ठिनुम र'ई। पुथी नू पुरखर गहि उज्जना-बिज्जना, नन्ना-मन्ना गुठिन ईरका, थिथाबाचका, मेंज्जका अरा गुनुच्का गहि ख़ंजपा र'ई। एन अयंग-बंग अरा पुरखारिन धइन मनदन का डण्डी-ख़ीरी इन्ना गूटि नमागे ख़ोड़चर जोगबाचर। ई पुथी ता ओन्टे हूँ डींड़ दव लग्गो आदिम एंग्हय नलख गही मूल्ली मनो। मुंज्जा नू पुथि चिपत'आ गे **सहड़ा चि'ऊ** झारखण्ड झरोखा गे हूँ धइन चि'अनुम दव बाख़दन।

नारायण भगत

ख़द्दी (सरहुल)

कहा जाता है कि उराँव समाज में ख़द्दी (सरहुल) ही उनका मुख्य त्योहार है इसी कारण यह उनके सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

सरहुल भारत के अनेक जन-जातीय क्षेत्रों में मनाया जाता है। जहाँ भी उराँव आदिवासी हैं, वहाँ इसे एक मुख्य त्योहार के रूप में मनाया जाता है। झारखण्ड, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा एवं पश्चिमी बंगाल के चाय बगानों एवं उत्तर प्रदेश में उराँव लोग इस त्योहार को मनाते हैं। परन्तु झारखण्ड के उराँव जाति का यही मुख्य त्योहार है। झारखण्ड क्षेत्र में इस जाति का (सबसे अधिक) बाहुल्य है, उराँव लोगों के सम्पर्क में रहने वाले अन्य जन-जातियाँ जैसेः- मुण्डा, खड़िया, हो, सदान आदि भी इसे धूम.धाम से मनाते हैं। इस अवसर पर सभी अपने-अपने संगे-संबंधी एवं मेहमानों को बुलाते हैं।

ख़द्दी (सरहुल) पर्व फागुन (होली) के बाद शुरू होता है और मई में समाप्त हो जाता है। उराँव लोग प्रकृति के पुजारी हैं, यह एक मानी हुई बात है। इन लोगों का मानना है कि हमारा जन्म इसी प्रकृति की गोद में हुआ है और प्रकृति ही हमारी रक्षक हैं। यह त्योहार समाज के लिए मात्र मस्ती, उमंग का नहीं बल्कि प्रकृति पूजन का त्योहार है, साथ ही मानव का प्रकृति से अटूट संबंध है। प्रकृति ने हमें जीवन दान दिया है, अपनी गोद में पालकर बढ़ाया है और अपनी ही अंचल में हमें सुरक्षा प्रदान की है। इसके बगैर हम जीवन की कल्पना नहीं कर सकते हैं। बसन्त के आगमन के साथ ही प्रकृति अपना श्रृंगार करना शुरू कर देती है। पेड़-पौधों में नये-नयें कोमल पत्ते लग जाते हैं पेड़ फूलों से झबरा जाते हैं। इस महमहाते मौसम में लोगों के मन में आनन्द, उमंग का संचार होता है। प्रकृति के रंग-रूप भी बदलते जाते हैं। ऐसे समय में उराँव मानस पटल को प्राकृतिक भंगिमाएं देखकर उत्साहित होना स्वाभाविक है। प्रकृति का अभिनन्दन कर ऐसे ही मनमोहक वातावरण में ख़द्दी (सरहुल) मनाते हैं।

उराँव जनजाति निम्नालिखित आधार पर ख़द्दी (सरहुल) को सम्पन्न करता है:-

1. सूर्य के संग धरती (पृथ्वी) का विवाह।
2. प्रकृति पूजा, पेड़.पौधों का पूजा।
3. ख़द्दी (जन्मोत्सव)।

सूर्य के संग धरती का विवाह इस तथ्य के पीछे बड़ा दर्शन छिपा हुआ है। उराँव का मानना है कि सूर्य सर्वशाक्तिमान देवता है और धरती (पृथ्वी) सर्वशाक्तिमाती देवी। इन्ही देवता (पुरूष) वर्ग और देवी माँ (स्त्री) के संबंध से ही संसार में सृष्टि कायम हुई है। अगर सूर्य की रोशनी पृथ्वी पर नहीं पड़े तो पृथ्वी पर कोई भी जीव-जन्तु जीवित नहीं रहेंगे। इन्ही कल्पनाओं के तहत हम पेड़-पौधों का उगना मानते हैं। आज भी हम महादेव और पार्वती जैसी देवी-देवताओं को ही सृष्टि का आधार मानते हैं।

ख़द्दी पर्व मनाने के पीछे कुँड़ुख़ उराँव जाति का धारणा है कि इसी अवधि में धरती माता का विवाह सूर्य के साथ हुआ था। यह परम्परा की बात है। इन्हीं मान्यताओं को कुँड़ुख़/उराँव लोगों ने पर्व के रूप में मनाना प्रारंभ किया। पिछली फसल कट जाने के बाद धरती कुँवारी मानी जाती है। इसलिए सरहुल पर्व मनाने के पूर्व कोई भी उराँव खेतों में खाद नहीं डालता। मौसमी फल का सेवन घर का प्रमुख तब.तक नहीं करता जब तक वह सरहुल (ख़द्दी) का त्योहार सम्पन्न नहीं कर लेता।

उराँव जाति में किसी भी कुँवारी लड़की और लड़का का संबंध अवैध मानने की परम्परा है। जब तक सामाजिक रीति-रिवाज के तहत उनका विवाह नहीं हो जाता तब तक किसी भी लड़का-लड़की का शरीरिक संबंध अवैध माना जाता है। उराँव रीति-रिवाज से विवाह के बाद स्त्री-पुरूष से उत्पन्न बच्चे का जन्म संस्कार भी आवश्यक होता है। जाति में जब.तक उनका सामाजिक संस्कार या शुद्धिकरण नहीं होता हैं, तब तक माँ और बच्चे को छूत मानते हैं, अर्थात् "सोतरा" कहते हैं। उनका दिया हुआ खाना नहीं खाते हैं। छः दिन पश्चात माँ को नहला-धुलाकर नये वस्त्र पहनाया जाता है और उसका सामाजिक रीति-रिवाज के अनुसार जन्म-संस्कार एवं शुद्धिकरण किया जाता है। सामाजिक संस्कार के बाद ही स्त्री या माँ गृह कार्य करती है। इस जन्म संस्कार को हम मूल रूप में जन्मोत्सव भी कह सकते हैं। इस तरह बच्चे का जन्म (ख़द्द गही कुन्दरना) के सुअवसर पर आनन्द मनाना ही "ख़द्दी" है। इसी को हम ख़द्दी की अमूल्य परिभाषा कह सकते हैं।

इसके संदर्भ में एक मान्यता यह है कि इसी समय प्रकृति का विवाह हुआ था। यहाँ प्रकृति के अन्तर्गत धरती माता एवं सूर्य देवता के विवाह को मानते हैं जिसके फलस्वरूप धरती जीव.जन्तुओं, एवं पेड़-पौधों इत्यादि से परिपूर्ण हुई। इसी समय में लगभग सभी पेड़-पौधों में नये-नये पत्ते, फल-फूल आदि आने लगते हैं जिसे मान्यता अनुसार कहा जाता है कि प्रकृति के विवाह के फलस्वरूप ही फल-फूलों

की उत्पति हो रही है। अतः उराँव लोगों में कोई भी नये मौसमी फल-फूल, शाक-सब्जियाँ घर के प्रधान तब तक नहीं खाते हैं, जब तक कि ''सरहुल'' न हो जाए क्योंकि उनका मानना है कि ''सरहुल'' के पूर्व धरती कुँवारी होती है। अतः वे उस समय का फूल-फल ग्रहण करने योग्य नहीं है। यही कारण है कि चैत मास में उराँव जाति में विवाह नहीं होता, क्योंकि उसके अनुसार यह समय देवी-देवताओं के विवाह का समय होता है।

इस प्रकार बसन्त ऋतु आगमन के पूर्व धरती माता को स्वच्छ एवं पवित्र मानते हैं। जब सूर्य देवता के साथ धरती माँ का विवाह रचने के बाद ही हम धरती विवाह के रूप में सरना पूजा करते हैं उसके बाद ही खेतों में खाद डालने, बीज बोने का काम आरम्भ करते हैं। चैत माह उराँव मान्यता के आधार पर वर्ष का दूसरा माह होता है। दूसरे माह में हम धरती का विवाह करते हैं और कृषि कार्यो में लग जाते हैं और आने वाले दिनों में हमारा घर धन-दौलत, लोग-लक्ष्मी से भरपूर हो। इन्ही आशाओं को बांधते हुए उराँव जाति वर्ष में एक बार धरती को गोबर से लीपकर (विवाह के रूप में) नैगस/पाहन या पूजार पृथ्वी पर सिन्दूर लगाकर विवाह रचाते हैं।

प्रकृति पूजा

उपरोक्त पंक्तियों में मैंने कहा है कि किसी भी नये जन्म के बाद सामाजिक या जन्म संस्कार आवश्यक है। उसी प्रकार पेड़-पौधों पर नये-नये पत्ते एवं फूल, मंजर आदि लगते हैं, इनके उपयोग या उपभोग के लिए भी हम सामाजिक संस्कार आवश्यक मानते हैं। यही कारण है कि उराँव लोग नये पत्ते एवं साग, फल को नहीं तोड़ते और न खाते हैं। प्रकृति की पूजा करते समय नये फल.फूल चढ़ाते हैं उसके बाद ही हम कोमल पत्तों का व्यवहार करते या खाते हैं। अगर भविष्य के लिए अंति आवश्यक भी हो तो उसे घर में लाकर बाहर आंगन या बरामदे में रखा जाता है। पूजा के पूर्व मुख्य घर या रसोई घर में प्रवेश नहीं किया जाता है, कहने का तात्पर्य यह है कि धरती रूपी माँ और प्रकृति स्वरूप आंचल में हमारा जन्म हुआ। इसी धरती माँ की गोद और प्रकृति की छाया में हम पल कर बड़े हुए जिसका मझे गर्व है। क्यों न इसकी खुशहाली मनावें। इसी जन्म उत्सव की खुशी एवं सामाजिक घटना को ख़द्दी (सरहुल) कहते है।

शुद्धिकरण एवं पवित्र करना

ख़द्दी पर्व अथवा सरहुल पूजा के पूर्व प्रथम दिन सरना स्थल को साफ कर शुद्धिकरण करते हैं। पूजा स्थल जहाँ चेंगना की बलि देते हैं वहाँ पर छोटी जगह साफ कर गोबर से लीपाई करते हैं। इस दिन गाँव में खेत-टांड़ या कोई भी भूमि को जोतना-कोड़ना पूर्ण वर्जित रहता है। गाँव में समाज विरोधी कार्य करने वालों से आर्थिक दण्ड लिया जाता है। प्रत्येक गाँव में किसी खास जगह के कुआँ या डांड़ी या जलाशय से दो घड़े पानी भरकर सरना के मध्य स्थल में रख देता है। सरना माँ के लिए लाया गया पवित्र जल को पूजा से पहले कोई भी जीव-जन्तु या अन्य व्यक्ति स्पर्श नहीं करता है। दोनों घड़े का पवित्र जल ज्यों का त्यों रहने दिया जाता है, अन्य व्यक्तियों को स्पर्श नहीं करने दिया जाता है। दोनों घड़े का जल घटने या फूटने पर कोई अप्रिय दुर्घटना होने की संभावना रहती है। घड़े का पानी नहीं घटने पर लोगों को पूरा विश्वास होता है कि वर्ष भर अच्छी वर्षा होगी तथा धन.दौलत, बरकत घर के लिए आएगा। शुद्धिकरण के दिन ही शाम को सरना स्थल पर आग जलाई जाती है, ताकि सरना स्थल की पवित्रता बनी रहे आरै अनिष्टकारी देव-भूत वहाँ से भाग जाए। इस क्रिया को 'नाद खेदना' कहते हैं, अर्थात शैतान के सब प्रकार के हरकतों को घर से खदेड़ देना।

सरहुल पूजा

सरहुल के दिन पहली बेला गाँव के बच्चे, बूढ़े और नैगस, पूजरस, पहान-महतो एक साथ गाँव-आंगन में छोटा शिकार करते हैं। गाँव आंगन में ही मुर्गी-चेंगना को पकड़ते है जो पूजा के समय सरना माँ और विभिन्न देवी-देवताओं के नाम पर बलि दी जाती हैं। इसी बेला में सखुआ के फूल और पत्ते, डालियाँ लायी जाती हैं। प्रत्येक घर से चाला पच्चो (सरना माता) के लिए अरवा चावल पहुँचाते हैं। ख़द्दी के दिन अपराह्न से पूजा आरम्भ होती है। गाँव के बच्चे, बूढ़े सभी मौजूद रहते हैं। सरना स्थल पर ढोल-नगड़ा और शहनाई बजाते हैं। गाँव के "नैगस" (पहान. पूजारी) द्वारा विधि-पूर्वक पूजा सम्पन्न की जाती है। "नैगस" सरना माँ (चाला पच्चो) एवं सभी देवी-देवताओं के नाम पर सरना पूजा करता है। इस अवसर पर अपने पूर्वजों का भी ख्याल करता। क्रमशः सभी के नाम पर अरवा चावल देता, और फूल चढ़ाता, सिन्दूर टीका लगाता, स्वच्छ जल देता एवं सोमरस के रूप में हड़िया

पानी चुवाता है। अन्त में सभी देवी-देवताओं के नाम पर चेंगना पूजकर पूजा सम्पन्न करते हुए कहता है:-

''एदे धर्मे इन्ना ख़द्दी उल्ला नूं एन बीड़ी बेल मनर आबदा ख़ेख़ेलन सिन्दरी टूड़र बेंज्जर'आ लगदन। किय्या पंचर, मईय्या निन धर्मे र'अदय, एरके सम्भड़आके। इन्नातिम बीड़ी बेलस अरा ख़ेख़ेल रानी मंज्जा। एंड़ो झना मेत मुक्का मंज्जका चड्डे ख़ेख़ेल नूं सृजन-बिरजन मनन नेकआ। ख़ेख़ेल बेंज्जरा मन्न-मास कुन्दिया अरा पूना अतख़ा खूरया। अक्कु उर्मी मन्न-मास पूंइदओ। एदे चाला पच्चो निन निंग्हय कोख नूं ख़द्दसिन पोसकी-पर्दाचकी। इसानिम चाला टोंका नूं पूना ख़द्दसिन पाकिया बअर एन निंग्हैं नामे ती सिन्दरी तुड़ालगदन, ओन्टे मुनु झरा चूरख़आ चिआ लगदन अरा निंग्गागे ख़ेर चिंयम एड़बा लगदन। दवले ओनके मोख़के आरा कोड़ेम रअके। एम्हय पद्दा-ख़ेप्पन उर्मीन कोड़ेम ए-रके। अन्न-धन्न, लोग-लक्ष्मी उर्मी नूं बराकइत चिअके। बेंज्जेरकार गही कोड़ेम ख़द्द-ख़र्रा मनन नेकआ होले बरना चान अऊरेम ख़द्दी मनोम। धर्मे ए-रके सम्भड़आके, ऐदे ओन्दा इन्ना ख़द्दी परब उल्ला नूं निमागे उर्मी बारहो-तेरहो देव-नाद ओर्मारगे चिआ लगदन। ओन्दा ओर्मारगे चिआ लगदन। ओन्दा ओनगुसानिम ओक्का अरा ओन्ड.मोक्ख लिंघआ। ओर्मर गही नामे ती आबदा तिख़िल, नौर पूंप चिआ लगदन, ख़द्दी गही झरा चिआ लगदन कोड़ेम र'अके। मुंज्जा नूं ओंग्होन बिंख़आ लगदन।'' '

पूजे गये बलि चेंगना को अरवा चावल के साथ खिचड़ी (चाला सूड़ी) पकाई जाती है इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। अन्त में ढोल- नगड़ा, बाजा-गाजा के साथ नाचते-गाते गाँव वापस लौटते हैं। पनभरा अथवा पूजार (नौर पूंप) सखुआ फूल एवं दोनों घड़े का पवित्र जल को आशिष रूप में घर ले आते हैं। सबसे पहले गाँव का प्रधान या महतों, सयाना भूंइहर के आंगन में ''नैगस'' पहान राजा का स्वागत किया जाता है। पहान राजा ''नैगस'' के पैर थाली में रखकर धोये जाते, कभी-कभी उन्हें नहलाये भी जाते हैं। इस अवसर पर जो गीत गाया जाता है वह ऐसा है:-

चानुम-चानुम नैगायो, भला
बेलर लेखा बेंज्जेरआ लगदय 1.2
ख़द्दी पइरी नैगायो, भला

बेलर लेखा बेंज्जेरआ लगदय। '

अपने सुविधानुसार सभी घरों में सरहुल का आशिष बाँटते। शाम को **स्वादिष्ट** एवं अच्छे भोजन करते हैं। रातभर मांदर-नगाड़ो के ताल पर सरहुल गीत **होता, कभी** ख़द्दी नृत्य होता है।

फूल खोंसी या पूंप ख़ट्टना

सरहुल त्योहार के अवसर पर एक परम्परागत दस्तूर है जिसे फूल खोंसी या पूंप ख़ट्टना कहा जाता है। इन दस्तूर का विस्तरित रूप ऐसा होता है।

"ख़द्दी बासी उल्ला" या सरहुल पूजा के बाद अपने सुविधानुसार पवित्र जल और सखुआ के फूल बांटते हैं। पहान सरना स्थल पर चढ़ाये गये पवित्र जल और सखुआ फूल को सभी घरों में घूम-घूम कर बांटता है। यह कार्य उसके सहायक पूजार द्वारा सम्पन्न होता है। फूल खोंसी या फूल बांटने का मुख्य अर्थ (ख़द्दी) सरहुल की खुशियाली को सभी घर- परिवारों में बांटना। फूल बांटते समय "नैगस, पूजरस", पहान-पूजार के साथ गाँव के लोग भी रहते हैं जिससे इस नये वर्ष में धरती पर अच्छी वर्षा हो, और गाँव के सभी घर-परिवार, धन-दौलतों से परिपूर्ण हो। साथ ही सभी घरों का जीवन मंगलमय हो, किसी तरह की बीमारी, रोग, पाप का प्रभाव गाँव में न पड़े। इन्ही आशाओं के साथ घर की महिलाएँ बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ फूल और पवित्र जल ग्रहण करती हैं। इस पवित्र जल को ग्रहण करती हैं। इस पवित्र जल को घर के भीतर-बाहर आंगन में छिड़काती और फूल को छत की अगुवानी पर खोंसती हैं। इस दिन गाँव के सभी बच्चे, बूढ़े, माता, बहनें युवक. युवतियाँ एक दूसरे के घर-परिवार में आते-जाते और खुशियाँ मनाते हैं।

कहानी

ख़द्दी या सरहुल त्योहार से एक कहानी जुड़ी हुई है, जिसका वर्णन करना यहाँ आवश्यक है:-

उराँव जाति के बीच एक प्रचलित लोक कथा है, जो उराँव रीति- रिवाज के आधार पर सही मालूम पड़ती है।

आदिकाल में एक कुँडुख़ राजघराने में राजा के सात पुत्र थे। इन सात भाइयों में सबसे बड़ा पुत्र का नाम कैइला था। कैइला सबसे बड़ा पुत्र होने के कारण

परिवार की सारी जिम्मेवारी, उन्हें परिवार का भरण- पोषण करना तथा परिवार के सभी प्रकार के कार्यो को संभालना पड़ता था। बंकी कैइला की धर्मपत्नी थी। वह हमेशा पूजा-पाठ में व्यतीत करती थी। सबसे बड़ी बहु होने की वजह से अपने ससुर की पूर्ण रूप से सेवा नहीं कर पाती थी। वह परिवार संभालने के कार्यो में ही अधिक व्यस्त रहती थी। गोतनियाँ (बहुएं) किसी भी काम-धंधा के लिए एक दूसरे पर आश्रित रहती थी। वे हमेशा एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाती थी।

बंकी राजा को खुश नहीं कर सकी। राजा शराबी था, वह हमेशा नशा में रहा करता था। उन्हें घर-दरबार की चिन्ता नहीं रहती थी। एक दिन एक साधु (तिम्बु आलस, भगतस बेसे) राजा के आंगन में आया। राजा ने साधु से कहा कि तुम हमारे घर के बारे में अच्छा सगुण बतालाओ। बड़ी बहु मुझसे अच्छा व्यवहार भी नहीं करती है। मेरी सेवा नहीं करती, इसका क्या कारण है?

साधु ने राजा के प्रश्न का जवाब देने के लिए वह अपना भगत काम (डलिया देखना) शुरू कर दिया। हाथ पर एक सखुआ पत्ता पर सगुण देखकर बताने लगा कि आपकी सबसे बड़ी बहु अच्छी आचरण की नहीं है। इसके शरीर में बंगी है। बंगी खराब आचरण का लक्षण है। बंकी बिसाही है। यदि इसको घर से नहीं निकाला गया तो आपका घर परिवार का सर्वनाश हो जाएगा। यह कुँड़ुख़ (उराँव) राज घराने में एक बुरी चाल थी। कैइला की धर्मपत्नी बंकी को राजघराने और प्रजा ने मिलकर डाइन- बिसाही साबित कर दिया। यह (कूटनीति) बंकी को पता नहीं थी। उसी दिन से बंकी अपने छोटी देवरानियाँ एवं देवरों की दुश्मन बन गयी। डलिया देखने के बाद छोटी देवरानी घर आकर सभी (बड़ी बहुओं) को इसकी सूचना दी। सभी गोतनियाँ एक जगह इक्ट्ठा होकर बड़ी गोतनी बंकी को बुरी औरत, डाइन.बिसाही समझ कर कोसने लगी। वे उनकी आलोचना करने लगी। सभी खिन्न होकर उससे आँख चुराने लगी और कोई भी गोतनियाँ उससे बातें नहीं करती थी। फिर भी बंकी अपने ईमान-धर्म पर अटल थी, वह अपने पूजा-पाठ पर लीन रहा करती थी।

एक दिन राजा ने अपने मंत्री को पड़हा पंच की बैठक बुलाने का आदेश दिया। बंकी बिसाही, डाईन है इसकी सूचना सभी क्षेत्र के पड़हा राजा, दिवान कोटवार को भेजा। सभी पड़हा राजा, दिवान एवं प्रजा की बैठक में फैसला हुआ कि सचमुच में बंकी डाईन.बिसाही है, इसलिए इसे अपने राज्य-क्षेत्र से बाहर निकाल दिया जाय।

परन्तु कुछ प्रजा बंकी के आचरण से भली.भांति अवगत थी। उनके अनुसार बंकी कभी डाईन-बिसाही नहीं हो सकती है, वह स्त्री तो "देवी" है। भगवान इस गुणवान सचरित्र स्त्री पर दया करें। अगर बंकी को इस राज्य-क्षेत्र से निकाला गया तो यह देश ही अकालग्रस्त हो जायेगा। वास्तव में बंकी ईश्वर भक्त थी। उन्हें ईश्वर का वरदान मिला था। प्रजा प्रार्थना करने लगी कि ईश्वर इनकी रक्षा करें। यह बात उराँवों की कुँड़ुख़ भाषा में ऐसी कही जाती है:

"दव घोखउर अरा राजी गही कोड़ेन बिद्दु आलर जिया-जिया नूं धर्मे ती ओहरा नन्नर" ए-धरमें एम्हैं राजिन बच्छा'बआ। एंग्है बेलस गही तंग आली बंकिन बछाबआ। अदि मैंया जे गुनहा ठेका बाचका र'ई अदिती बंकिन बछाबआ। राजी नूं एम दव-कोड़े संगे ऊज्जदम नेकआ। राजी नूं धरम अरा नेंवई इजअन नेकआ।" '

सभी गोतनियाँ बंकी पर ऐसा दोषारोपन करने लगी पड़हा पंच को मानना पड़ा कि बंकी सही में बिसाही है। प्रायः हरेक व्यक्ति ने इस पर अनेक प्रकार से दोषारोपण किया। कैइला सच्चाई और बनावटी झूठे आरोप को जानते हुए भी चुप था। चूँकि सभी भाई उनके विरोधी हो चुके थे। पड़हा पंच के अधिकांश राजा, दिवान और प्रजा बंकी के विरोधी थे। कुछ ही प्रजा बंकी और कैइला के पक्ष में थे। फिर भी पड़हा पंच के एक वरीय सदस्य ने कहा कि आज तक मैंने जितनी पड़हा पंच का न्याय देखा है, उनमें इस तरह का न्याय कभी नहीं हुआ, जैसा कि आज के पड़हा पंच में फैसला हुआ। मैं सच कह रहा हूँ एक दिन व्याय की सजा हमलोगों को अवश्य मिलेगी। पंच में निर्णय लिया गया कि बंकी को बोरा में बंद कर नदी में बहा दिया जाए। कैइला पड़हा पंच के सामने अनुनय-विनय नहीं कर सका अपनी प्यारी पत्नी की सुरक्षा के लिए कोई भी बहाना नहीं बना सका। अन्त में कैइला ने अपनी पत्नी को बचाने का उपाय किया। वह सैकड़ों मिल दूर नदी में नाव की व्यवस्था किया एवं बड़े-बड़े खम्भे गाड़े गये। पंच के निर्णय अनुसार बंकी को नदी में बहा दिया गया।

बंकी बहते-बहते काफी दुर चली गई। कुछ दूर नदी किनारे एक गाँव था जहाँके युवक.युवतियाँ स्नान कर रहे थे, कुछ लोग मछली मार रहे थे। उन लोगों ने उस नाव को देखकर उस खम्भे में फसाने का प्रयास किया और नाव को पकड़ लिया। जहाँ उन्हें बोरे के अन्दर से एक महिला मिली। वह स्त्री बंकी थी। बोरा से बाहर आते ही भोजन पानी मांगी। कुछ दिन उसी गाँव में वास करने लगी, बाद में एक सप्ताह बीतने पर फिर से अपने ससुराल लौटने लगी। लौटते समय जहाँ

भूख-प्यास लगा वहाँ मांगते-खाते वापस आने लगी। जहाँ थकान महसूस हुआ वहीं अपना आश्रय ले ली, इस तरह महीनों बीतने पर पुनः अपनी ससुराल पहुंची। बंकी यह नहीं जानती थी, कि बोरे में बंद कर नदी में फेंकने का तात्पर्य प्राण हत्या करना था। दुबारा उसे सजा मिलेगी यह आशा नहीं थी। बंकी के लिए मरने जीने का कोई प्रश्न ही नहीं था। इसी कारण वह पुनः अपने ससुराल पहुंची।

बंकी जब अपनी ससुराल आयी तो छोटी गोतनियों के बीच हंड़कपम मच गया, वे भय से आतंकित हो गयी। वे समझने लगी कि बंकी वास्तव में डाईन-बिसाही हैं। इसी कारण पुनः स्त्री रूप लेकर आयी है। बंकी को नदी में बहाये बये बहुत दिन हुए, फिर भी वह पुनः इसी स्थान पर आ गई। इस भय के कारण अनेक प्रकार की भयावह बातें फिर से फैलने लगी। सभी गोतनियाँ फिर हंगामा मचाने लगी कि बंकी को मार पीट कर भगाया जाय, वरना जिन्दा लोगों को मार डालेगी। अब सर्वनाश का समय आ गया, इस घर में रहना कठिन है। बंकी अपनी पुरानी दैनिक कार्यो में लीन रहती थी। प्रतिदिन घर का काम.काज करती थी। कोई अतिथि आ जाने पर उनका बहुत अच्छी तरह से स्वागत करती, खिलाती- पिलाती थी। फुर्सत समय में वह पूजा. पाठ करती थी। छोटी बहुएँ हुक्का- चिलम के बहाने एक दूसरे के घर जाती थी, एक दूसरे की शिकायत करना आम बात थी। कुछ औरतों की आदत ऐसी है कि घर की बातों को इधर.उधर फैलाना। छोटी सी बात को बढ़ा.चढ़ाकर अपने पुरूषों को बताया करती थी। कुछ औरतों को इस तरह की बातों में काफी आनन्द मिलता है। बंकी जानती थी कि इस तरह की बेवजह बातों से कोई फायदा नहीं। वह किसी की शिकवा-शिकायत नहीं करती थी। अनावश्यक बातों से दुर रहती, दुष्टता की बातें नहीं जानती थी। परिस्थिति के अनुसार बदलती ही है, ईश्वर ने उसे अकेली छोड़ने का मन बना ही लिया था। घर में सभी भाईयों एवं बहुओं के साथ झंझट, कहा-सूनी होने के कारण कैइला पुनः अपनी स्त्री बंकी को घर से बाहर करने का निश्चय किया। बंकी बोली "हाय धर्मे एंग्गन ई दशा नंज्जा"। कैइला अपनी स्त्री बंकी को लेकर घर से निकल पड़ा। बंकी साथ में खाने-पीने लिए आवश्यक बस्तुओं को अपनी बौगी (टोकरी) में लेकर निकल पड़ी। दोनों अपना चलने लगे। रास्ता घनघोर जंगलों से भरा हुआ था। जहाँ भूख लगती थी, फल-फूल खाते थे। प्यास लगती थी, तो नदी या झरने का पानी पीते थे। चलते.चलते शाम ढलने लगी। उन लोगों ने एक साल वृक्ष का कुंज्ज (सखुआ पेड़ का झुण्ड) के नीचे आश्रय लिया। वहाँ पर रहने के

लिए एक छोटा सा कुम्बा बनाया। गीत शादी राग में :-

गीत- महारनी भइरो बिसाही रहचा, भइरो कोसाही रहचा।
बोरा नू बिटचर भइरो, बॉक्सा नू सज्जर भइरो।
अकय गंगा नू तूक्कयर चिच्चर भइरो, बोहाबाचर चिच्चर।
कैइला बन्दरद ईरया जोंहचा, हिबिड़यस चिच्चस भइरो।
खुटान गड्डास भइरो, जल्लिन हिबिड़यस चिच्चस भइरो।
मरचा तरा औत्थरार भइरो, बॉक्सन पलका हेल्लरर भइरो।
लगे कैइला कुम्बा कमआ, लगे कैइला छपरिन कमआ।
नाम इत्तरम र'ओत कैइला, नाम इत्तराम बसा ननोत। '

''पच्चो-पचगिर असन अक्कु दवगने र'आ ओर नंज्जर। चौगुड़दी किट्टी, दुड़ख़ो, तेला, पकरी, बड़ा, जम्बू, टटख़ा, खन्डो, गुट्टि ख़ंजना आबो मन्नती अड्डा निन्दकी रहचा। नौर मन्नगा मानिम असन रहचादिम। एंड़ो पच्चो-पचगिर गे खंज्जपा मल ख़क्खरआ हेल्लरा, ख़ने मक्का अरा तेला गही ढेबसा कमचस। आस ढेबसन होअर कि जोक्क गेच्छा काला-काला किस्स, ख़ेर, ओड़ा, खोरहा, माक, चुब्बा गुट्टिन पिटा लगियस। बंकी अहड़ा गुट्टि कमओ इरतो तले पच्चो-पचगिर संगेम ओना-मोख़ा लगियर। अन्नेम ढेइर चन्दो अरा चान केरा। '

गीत- सारिन्दा गोसांई सारीमदो (कोय)
हाएरे ख़द्दी मनओत, हाएरे फग्गु मनओत।
सारिन्दा गोसांई सारीमदो (कोय)
इन्ना ख़ोंदेम गोसाईया सारीम
इन्ना ख़ोंदेम गोसाईया सारीम।
नेला ख़ोंदेम गोसाइ सारीम
हियो ही दल-दल - 2
तेला ढंबसा गोसांई, मक्का ढंबसा
मक्का ढंबसा गोसांई सारीम
हियो ही दल.दल - 2
ठिलया झरा भईयारे
गिठिया झरा गोसांई सारीम दो,
इन्ना ख़ोदेम सारीम

हियो ही दल.दल - 2
मुनो झरा भइयारे बोथा झरा,
बोथा झरा भइयारो सारीम.सारीम दो,
इन्ना ख़ोंदेम गोसांई सारीम,
हियो ही दल.दल - 2
खईयन एड़'ओत भइयारे, ख़े-ड़ोन ऐड़'ओत
ख़े-ड़ोन ऐड़'ओत भइयारे सारीम दो,
हियो ही दल-दल - 2
ख़ेरन एड़बोत, चुट्टिन पुदगओत,
सुड़ी ननोत मोख़ोत मोख़तोओत सारीम,
सारिन्दा गोसांई सारीम कोय,
हियो ही दल-दल - 2 '

कुछ दिनों बाद कैइला को अपने घर लौटने की इच्छा होने लगी। उसे अपने रईयत-प्रजा और भाईयों का ख्याल आने लगा। गाँव की चिन्ता सताने लगी। अब मन ही मन घर लौटाने के लिए सोचने लगा। कैइला पूरे माह भर का खाने-पीने की व्यस्था करने लगा। विभिन्न प्रकार के कन्द-मूलों को एकत्रित किया एवं विभिन्न प्रकार के जानवरों, पक्षियों को कुम्बा के निकट बांध कर रखा। कैइला, बंकी से कहने लगा कि यदि मुझे शिकार से लौटने में देर होगी या शाम हो जायेगी तो इन बांधे हुए मुर्गी-चेंगना, खरगोस या पशु को मार कर खा जाना। दूसरे दिन कैइला शिकार करने के बहाने अपना घर वापस चला गया। वह अपनी पत्नी को घर लौटले के विषय में कुछ भी नहीं बतलाया। कैइला जब शाम तक वापस नहीं लौटा तब बंकी को चिन्ता हुई। इतनी देर तक क्यों नहीं लौट रहा है। मेरे पति को कोई जानवर तो नहीं खा गया? आज लौटेंगे, कल लौटेगा इसकी आशा करते हुए थक गयी। वह साल वृक्ष के नीचे ही अपनी भक्ति में लीन हो गई।

इधर कैइला अपने राज में आकर देखता है कि कुछ ही दिन बाद अपना परिवार छिन्न-भिन्न हो गया है। सभी एक दूसरे से लड़ रहे हैं। भाई.भाई आपस में लड़कर अलग.थलग हो गये। राज परिवार की मान- मर्यादा समाप्त हो गई। कैइला अपने भाईयों से आग्रह किया कि मुझे आपलोग अपने परिवार में शमिल करें, सब

ठीक हो जायेगा। लेकिन कोई भाई-बन्धु उनके आग्रह को स्वीकर नहीं किया। इस हालत में सभी गाँव के पंच सदस्य और प्रजा उस राज परिवार का विरोध करने लगे। परन्तु मामला नहीं सलटा। अन्त में कैइला को फिर से बंकी के पास भेजा गया। जंगल में बंकी किस दशा में थी, इसको तो ईश्वर ही जानता होगा? कैइला पुनः बंकी की खोज में निकल पड़ा। कैइला उसी जंगल में कुम्बा के निकट पहुंचा जहाँ बंकी रहती थी। वह देखता है कि बंकी वहाँ पर नहीं है। बंकी नहीं मिली वह पश्चाताप कर रोने लगा और वह उसी साल- वृक्ष-कुंज्ज के नीचे प्रार्थना करने लगा।

बंकी के साथ ऐसा दुर्भाग्य हुआ कि जब कैइला उसे जंगल में छोड़कर घर लौटा था। उस वक्त बंकी गर्भवती थी। बच्चे के जन्मने के लिए कुछ ही दिन बाकी थे। बंकी बहुत दिनों तक आशा देखी जब तक जंगल के फल-फूलों के रूप में खाने को मिले तब तक उन्हें किसी प्रकार का दुःख नहीं हुआ। चैत चाँद में एक दिन उराँव लोगों का भाग्य चमका। बंकी रानी ने एक शिशु राजकुमार को जन्म दिया। इस बात की पुष्टि गीतों से होती है :-

एबसेरका पेल्लो रानी मनजा,
टोड़ंग मझी नू ख़द्दासिन पाकिया।
सखुआ मन्न किय्या पाकिया,
परता राजी नू ओच्चा दरा केरा। '

चैत माह में पूर्णिमा के दिन बंकी ने एक नवजात शिशु को जन्म दिया। "चैत चन्दो नू उन्दुल पुनी औला बंकी पुना ख़द्दासिन पाकिया।" वह जंगल में अकेली थी, फिर भी ईश्वर की कृपा से उसने वह सभी दुःख सहन कर लिया। शिशु को जंगल के एक कुम्बा में जन्म देना कितना कष्टप्रद है उस वक्त जब पति घर में नहीं हो तो और भी अधिक दुःख की बात है। इस समय बंकी को कितना दुःख हुआ होगा। इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। घनघोर जंगल के बीच बंकी का कुम्बा घर। ऐसी कठिनाईयों के बीच बड़े लाड़-प्यार से बच्चे को पाल-पोसकर बड़ा किया। दोनों माँ-बेटा कुम्बा में ही जीवन-यापन कर रहे थे। परन्तु कुछ दिनों बाद बंकी को अपने मानव.समाज की याद आने लगी। वह अपने जाति समुदाय में जाना चाहती थी।

जिस वृक्ष-कुंज्ज के नीचे झखरा कुम्बा में बंकी रहती थी, उसी वृक्ष पर "कौआ" एवं विभिन्न प्रकार की पक्षी रहते थे। एक रात कौवे अपने- अपने घोंसले

पर ही खूब काँव-काँव करने के बाद चुप हो गए। एक घंटे बाद एक जोड़ा कौआ पति-पत्नी देर से लौटा। देर से आने का कारण के विषय में आपस में वार्तालाप होने लगी। जो इस प्रकार है:-

पहला कौआ : अरे भई! आज आप क्यों इतनी देर से लौटे?

दूसरा कौआ : क्या बताएँ आज मैं बहुत दूर अपने खाद्य पदार्थ (चारा) की खोज में गया था। इसी कारण मुझे आने में देर हुई। परन्तु आप क्यों इतनी देर से आये?

पहला कौआ : क्या बताऊँ बतलाना या न बतलाना एक ही बात है, बताने पर भी लोगों को विश्वास नहीं होगा।

दुसरा कौआ : आप बतलाएँ तो सही। हम आप की बात को जरूर स्वीकार करेंगे।

पहला कौआ : बात ऐसी है कि मैं जिस देश की ओर अपना (चारा) खाद्य पदार्थ खोजने के लिए गया था, उस देश का राजा बहुत ही भयानक रोग से ग्रस्त है। पता नहीं वह राजा जिन्दा रहेगा या मर जाएगा। उस राजा को कान की बीमारी है, उसके कान से पिल्लू (कीड़ा) निकल रहा है, मै उसी पिल्लू को चून-चून कर खाने में व्यस्त हो गया था। इसी कारण मुझे आने में देर हो गई।

दुसरा कौआ : आप ऐसा कहते हैं, मैं तो सोचती हूँ कि कोई पापी व्यक्ति को भी ऐसा रोग नहीं होना चाहिए।

पहला कौआ : क्या इस तरह की बीमारी का कोई इलाज नहीं है?

दूसरा कौआ : क्यों नहीं होगा भाई! सभी प्रकार की बीमारियों की दवाई अवश्य है, परन्तु इस मानव जाति को कौन बतलायेगा? मैं कहती हूँ कि इन पेंड़.पौधों की जड़ी-बूटियों और कन्दमूल एवं पक्षियों के तेल (मिश्रण घोल) को उनके कान पर डालने से अवश्य ठीक हो जायेगा। मुझे ऐसा लग रहा है कि राजा आज रात भर जिन्दा रहेगा या नहीं।

पहला कौआ : अच्छा भाई आप जो दवाई बतला रहें हैं उसे लगाने पर ठीक हो जायेगा।

दूसरा कौआ : यह सही बात है कि जड़ी-बूटियों के दवाई से अवश्य ठीक हो जायेगा। लेकिन प्रश्न यह है कि ये दवाई करेगा कौन? यहाँ तो कोई मानव जाति है ही नहीं।

इस प्रकार आपस में बातें कर रही थी। बाद में शान्त होकर दोनों पक्षी सो गये। वृक्ष के नीचे बंकी रानी उनकी इन सभी बातों को बड़े ध्यान से सुन रही थी। बंकी रात में ही जड़ी-बूटियों और कन्द-मूलों को संग्रह कर दवाई बना ली। अब वह उस रोगी के घर जाने के लिए तैयार हो गई। परन्तु अनजाने में किधर जायेगी, कौन रास्ता दिखायेगा, बंकी का एकलौता बेटा के अलावा कोई नही था। इसी कारण बंकी अपनी जाति- समाज की खोज कर रही थी। प्रतिदिन धर्मेस (ईश्वर) की पूजा-पाठ में लीन रहती थी। वह सोच रही थी कि राजा के बीमार होने की सूचना धर्मेस (ईश्वर) ने कौए के माध्यम से भेजा है तो अवश्य ही धर्मेस (ईश्वर) राजा के घर तक पहुंचाने का जिम्मा कौआ को सौंपा होगा। यह बात बंकी के हृदय में बैठ गई थी। कुछ समय बीतने के बाद बंकी को एक नया रास्ता दिखाई देने लगा। दूसरे ही दिन सुबह पीपल वृक्ष की डाली में कौआ काँव-काँव करने लगा। बंकी का ध्यान आकृष्ट करने के बाद कौआ दूसरी वट वृक्ष की डाली पर जाकर काँव-काँव करने लगा। बंकी समझ गई कि यह कौआ उसे ही रास्ता दिखाने के लिए आया है। कौआ बार-बार इस डाली से उस डाली आना-जाना कर रहा था। सिर पर बौगी (टोकरी) में जड़ी-बूटियों की दवाई और साथ में बच्चा था। बंकी रानी कौआ के पीछे चल पड़ी। कौआ आगे-आगे जाता, बंकी उसका अनुसरण कर पेड़ के नीचे पहुंच जाती है। इसके संदर्भ में कुँड़ुख़ भाषा में एक गीत ऐसा है:-

गीत - एबसेरका पेल्लो रानी मंज्जा,
टोंड़ग मझी नूं ख़द्दासिन पाकिया।
ख़ाख़ाद खरा कोड़े बाचा, परता राजी नूं ओच्चा,
दरा केरा, किर्रा बिड़दो आनकीदिम केरा।

कौआ बंकी को काफी दूर ले गया। रास्ता चलते-चलते थकावट आने लगी, अब उन्हें भूख प्यास भी लग रही थी। वह गीत गाने लगी। यह गीत भी कुँड़ुख़ भाषा में है।

गीत - बंकी - एंवदा गेच्छा, ख़ाख़ा बड़ा पकरी,
ख़ाख़ा बड़ा पकरी।
ख़ाख़ा -साय टोंड़ग कुद्दोय बैनी, बड़ा पकरी,
बैनी बड़ा टाटख़ा।
बंकी - एंवदा गेच्छा, ख़ाख़ा जम्बू डाड़ा, बैनी जम्बू झरिया।
साय परता कट्टोय, बैनी जम्बू डाड़ा, बैनी झरिया।

इन गीतों से बंकी को और अधिक बल मिलने लगी। आगे चलते हुए जहाँ भूख लगा, वहीं पर फल-फूल, कन्द-मूल खा कर पेट भर ली, झरना के पानी से प्यास बुझा ली। थकावट लगने पर पेड़ के नीचे आश्रय लेती थी। चलते-चलते वह सात पर्वत पार कर चुकी थी और दुसरे राजा के क्षेत्र का नगर दिखाई देने लगा। इस प्रकार कौए ने उस बीमार राजा के देश में पहुंचा दिया और अपने देश की ओर लौट गया। बंकी सीधे राजा के घर पहुंचना उचित नहीं समझी। इसीलिए उसी नगर के एक गाँव में रहने लगी। रहते-रहते अनेक बीमारी का इलाज करने लगी। बंकी के दवाई से बहुत लोग अच्छे हो गये। अब इसे लोग देवी की तरह मानने लगे। गाँव के लोग इसकी पूजा करना शुरू कर दिया था। राजा को इस बात की सूचना मिली कि बंकी बहुत बड़ी बैद्य है। राजा ने आदेश दिया कि मेरा इलाज करने के लिए बंकी को महल के अन्दर लाया जाए। यदि इलाज सफल हो गया, तो बंकी के लिए एक गाँव दे दिया जायेगा। मंत्री राजा के आदेश पर पहले गाँव के लोगों से बंकी के बारे में पूछ-ताछ करने लगे और सच्चाई जानकर वह महल के अन्दर लायी गई। बंकी द्वारा जड़ी-बूटियों से बने दवाई देने पर राजा एक दिन में ही अच्छा होने लगा। राजा कुछ ही दिनों में भला-चंगा हो गया। बंकी के कार्य प्रणाली को देखकर राजा बहुत खुश हुआ। वास्तव में बंकी देवी है। राजा उसे अपने महल का आधा हिस्सा देने को तैयार हो गया। परन्तु बंकी लेने से इन्कार कर दिया, वह बोली मैं तो एक साधारण महिला हूँ, मुझे इतना बडा महल नहीं चाहिए। मैं यह महल लेकर क्या करूँगी। तब राजा ने अनेक पड़हा गाँव को उसके अधीन कर दिया, फिर भी वह स्वीकार नहीं की। वह अन्त में अपने घर लौटने की इच्छा व्यक्त की। तब राजा के कहने पर वह महल के एक छोटे से हिस्से में अकेले पुत्र के साथ रहने लगी। राजा की ओर से उनके खाने की सारी व्यस्था कर दी गई। अब बहुत खुशहाल जीवन-यापन करने लगी।

उधर कैइला जंगल में बंकी को खोजते-खोजते परेशान हो गया। ''न कुम्बा झोपड़ी है, न चिड़िया न किसी प्रकार की आनन्द दायक वस्तु वहाँ है। वह दिनों दिन सोचने लगा मै क्या करूँ?'' ईश्वर, धर्मे मुझे रास्ता दिखा, मैं किधर जाऊँ? ''एक रात को उसने आलौकिक ध्वनि सुनी। रात में साल वृक्ष की डाली बिना आंधी और हवा के खूब जोरों से हिलने लगी। अब गिरा-तब गिरा और भयानक रूप धारण कर लिया। कुछ देर बाद शान्त हो गया और एक आवाज सुनाई दी। ''बंकी तुम्हारी खोज में निकली है, वह यहाँ से चली गई। बंकी रानी एक शिशु राजकुमार को जन्म दी है।'' यह चाल एवं आवाज उसे सुनाई पड़ी, जहाँ उसने झखरा कुम्बा बनाकर शारण लिया था।

''एन्देर मंज्जा का मक्का मन्न गही डाड़ा बेगर ताका नूं डगर-डगर नुक्कुरआ हेल्लरा। अक्कुन खत्तरा, अक्कुन खत्तरा, एन्ने लग्गिया। तले आ संगेम ओन्टे सड़ा कच्छनखरई बअर दरा चइरो चौगुड़दी एरदस। ए-रागे इबड़ा टोड़ंग-परता पछिमें ओन्टे पद्दा नूं बंकी अरा तंगदस इरबरिम उज्जा-बिज्जा लगनर अरा बंकी आलारिन सेवा सुसईर ननाा लगी। '

इस प्रकार की अलौकिक ध्वनि सुनाई देने पर कैइला आश्चर्य में पड़ गया। कैइला जिसकी तलाश में था वह अब प्राप्त होने वाला था। ईश्वर (धर्मे) ने कैइला की प्रार्थना स्वीकार कर ली और बंकी के विषय में पूर्ण रूप से समाचार मिल गया। इस तरह जिस जगह पर धर्मेस की अलौकिक दिव्य ध्वनि 'चाल' सुनाई दी उस जगह को कैइला ने ''चाला'' कहा। जिस वृक्ष कुंज्ज के नीचे बंकी ''शरण'' ली हुई थी, उस स्थान को ही ''सरना'' कहा गया। कैइला ने अपने नवजात शिशु बच्चा ''ख़द्द'' को अपने पास लाने और उसका जन्म उत्सव ''ख़द्दी'' मनाने के लिए बंकी की खोज में चल पड़ा।

कैइला पश्चिम देश की ओर जाकर एक गाँव में ठहर गया। अपनी जीविका के लिए प्रतिदिन नगर, महल की ओर लकड़ी बेचने जाता था। इस तरह वह लकड़ी बेचकर अपनी जीविका चलाता था। बंकी की खोज के लिए रोजाना नई जगह की तरफ ही लकड़ी बेचने जाता था। एक दिन कैइला महल जैसे घर में एक स्त्री को अपना लकड़ी बेचा। घर मालकिन स्त्री बोली ''तुम किधर से लकड़ी लाते हों? तुरन्त आठ-आठ दिन पर लकड़ी ला देना।'' इस तरह प्रत्येक आठ दिन पर सप्ताह में एक बार कैइला बंकी के घर में लकड़ी लाया करता था। एक दिन अपने हृदय पर धैर्य

रखकर कैइला से पूछ बैठी, तुम आज कल बहुत अधिक चिन्ता ग्रस्त लगते हो। कोई विशेष बात है या कोई कठिनाई हो रही है, मै अपकी क्या सेवा कर सकती हूँ? कैइला ने अपनी सारी कहानी कह सुनाई कहानी बतलाते-बतलाते उसकी आँखे भर आई। बंकी सभी बातें सुनी फिर भी साहस, धैर्य बटोर कर चुप थी। दूसरे दिन फिर से उसे उन्हें लकड़ी लाने को बोली।

जब दूसने दिन लकड़ी लाया। तब बंकी ने लकड़ी रख ली और अपने नौकरों को आदेश देकर बोली कि कैइला को अन्दर लेते आवें। बंकी बोली कि तेल लगाकर स्वच्छ जल से नहलाया जाय और पहनने के लिए नये कपड़े दिये जायें। कपड़ा पहनने के बाद उसे भोजन के लिए बैठाया गया। कैइला ज्योंही भोजन समाप्त किया बंकी ने सारी कहानी सुनाई और बोली मैं ही बंकी हूँ यह आपका पुत्र हैं इसका जन्म उसी जंगल के कुम्बा में हुआ, जहाँ पर आपने मुझे गर्भवती दशा में छोड़ दिया था। कैइला की आँखों में आँसू भर आये, वह खुशी से रोने लगा। कैइला अपने पुत्र को पाकर हृद्य से लगा लिया। कुछ देर के लिए दोनों पति-पत्नि ने एक दूसरे को बांहों में भर लिया। बंकी अपने पति के मिल जाने की सूचना महल के राजा-रानी को भेजी। यह समाचार पाकर राजा-रानी बहुत खुश हुए और कैइला पुत्र सहित बंकी के स्वागत के लिए एक समारोह का आयोजन किया। इसी खुशी के उपलक्ष्य में ढोल-लगाड़े, घंट-शंख की आवाज पर उनका स्वागत किया और महा उत्साव मनाया। कैइला और बंकी को अपने महल के राजा-रानी होने की घोषणा की गई। सभी अमन चैन से रहने लगे। इसी ऐतिहासिक घटना को दुहराने के लिए उराँव लोग सरहुल (ख़द्दी) पर्व मनाने लगे।

उन्होन्ने सोचा कि वन का वह स्थान ''पवित्र स्थान'' है, जहाँ पर कौआ अथवा पक्षियों का बसेरा था। यहीं पर ईश्वर (धर्मेस) की दिव्य ध्वनि सुनाई दी थी। वही जंगल का कुंज्ज (झुण्ड) जहाँ पर बंकी और कैइला आरम्भ में शरण लिये थे, अपना निवास कुम्बा बनाये थे। कैइला को उसी जगह पर ''चाल'' आवाज सुनाई दिया और बंकी का पता बतलाया। उसी जगह पर शिशु (बच्चा) ख़द्द का जन्म हुआ था। इसलिए उस स्थान को ''चाला टोंका'' धर्मेस (ईश्वर) का वार्तालाप स्थल कहते हैं। ''सरना स्थल'' कहा गया। उसी जगह पर बंकी ने नये बच्चे (ख़द्द) को जन्म दिया, इसलिए यह जन्म स्थान या जन्म स्थल भी कह सकते हैं। सरना का अर्थ शरण लिया हुआ स्थल। इसलिए राजा-प्रजा सभी उस स्थान को प्रतिवर्ष पूजा-सेवा करने

लगे। बाद में अपनी इच्छानुसार इस नियम के पालन के लिए सभी गाँवों में सरना स्थल ''चाला टोंका'' छोड़ा गया। सरना स्थल ''चाला टोंका'' का जगह निश्चित होने के बाद हर गाँव में सरना पूजा कर ''ख़द्दी'' अर्थात् सरहुल मनाने लगे।

''पद्दा-पद्दा चैत चन्दो गही पुनी उल्ला नूं ओन हफ्ता गूटी गे राजी सोहान मंज्जा। आलर अरा पोक-पिपरी, चन्द्दो-बीड़ी, अरा मन्न- ख़ोप्पा औला पुना जिया मंज्जा केरा। ख़द्दी ओरे एन्ने मंजा।

''कैइला-बंकी, बुढ़ा-बुढ़िया होने पर डोली-पालकी में पूजा करने जाते थे।'' उसी के स्मरण में गाँव लेते हैं। सरना के पास पानी चढ़ाना या चेंगना बलि, मछली केंकड़ा पकड़ना कैइला का शिकार खेलना और बंकी बुढ़िया को खिलाने पिलाने की यादगारी का चिन्ह् है।

सखुआ (साल) वृक्ष का पत्ता पर सगुण देखा जा सकता है। और उसका फूल पवित्र है। सखुआ वृक्ष का फल खाने के लिए एवं लकड़ी, दतवन आदि हमारे लिए बहुत ही उपयुक्त है। इसलिए साल वृक्ष का महत्त्व काफी बढ़ गया। सरना स्थल में सखुआ कुंज्ज का ही बाहुल्य था, इसीलिए खुशी बांटने के रूप में सखुआ के फूलों को कानों में लगाते हैं। उसी फूल को एक दूसरे घर परिवार में बांटते या ले जाते हैं। कैइला-बंकी के लिए बाग-बगीचा घेर लिया था और सखुआ मुगरा या केओंद मुगरा से खरहा, हिरण, चिड़ियाँ मारकर वहीं जमा रखता था। उस बगीचे के शिकार से बंकी खाना बनाती थी। इसी की यादगार में सरना पूजा के दिन छोटा शिकार के रूप में मुर्गी, चेंगना पकड़ा जाता है। इस अवसर पर मछली/केंकड़ा पकड़ने का भी रिवाज हैं कैइला और बंकी उसी स्थान पर ईश्वर की पूजा-सेवा के लिए जाया करते थे। अब परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए इसी यादगार घटना स्वरूप बुढ़ा-बुढ़िया की पूजा-सेवा करते हैं अर्थात् ''चाला पच्चो'' सरना माँ की पूजा करते हैं।

इस तरह उराँव आदिवासी समाज में ख़द्दी (सरहुल) का पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

ख़द्दी डण्डी

1. ख़द्दी चन्दो ए-दा कोयः
कुल्ला लेक्खा अरगा लगीः
पईरी बीरि ए-दा कोय
कुल्ला लेक्खा अरगा लगी।

2. आली चेंप बरा लागी कोय,
कुम्बा नू कोर कोय कोरके बादन।
जियन कायन लओ कोय पेलो,
कुम्बा नू कोर कोय कोरके बादन।

3. एकसन रअदय को भइया,
ठेरेकी ओड़ा लेखा ढूरा लगदय।
परेता झुमइर नू रअदय को भइया,
ठेरकी ओड़ा लेखा ढूरा लगदय।

4. ने ख़दरो बरेदर का,
काड़ेमानू मुरूली राई।
बबु तम्बस बेरदर का
कड़ेमा नू मुरूली राई।

5. चिई नासगो गुड़लू पंईचा,
गुड़लू पानो होले किरीतः ओन चीओन।
सुन्दइर मूती कनियन पही नना कादन
गुड़लू पानो होले किरीतओन चीओन।

6. किर्रा बरा को भईयारे मोर
पेल्लो निंग्हैको हीरा लेक्खआ रई।
पईरी बीरिको भईयारे मोरा,
पेल्लो निंग्हैको हीरा लेक्खआ रई।

7. अना को झड़ी लेबेरे,
धोती निंग्हैं जोरोगो मानी।
तीनम डेब्बम पेल्लो धरेदय,
धोती निंग्हैं जोरागो मानी।

8. पतरन कीबा लवचा
पेल्लोगे दाव बनआ लगी,
पईरी बीरि कीबा लवचा
पेल्लोगे दाव बनआ लगी।

9. निंग्गन कोय निंग्यो
कुहु लेक्खआ जोगाबई
जों-ख़रगे कोय
कुहु लेक्खआ जोगाबई।

10. नीन कोय परबतिया
एन्देर ए-रर की भोटान कादीः
मला ईरदी राजी गहि डमाडोल
राँची सहरनूं जेहेल मंज्जा।

11. सारिन्दा गोसांई सारीमदो (कोय)
हाएरे ख़द्दी मनओत, हाएरे फग्गु मनओत।
हाएरे ख़द्दी मनओत, हाएरे फग्गु मनओतः
सारिन्दा गोसांई सारीमदो (कोय)
इन्ना ख़ोंदेम गोसांई सारीम
ने-ला खोंदेम गोसांई सारिम,
इन्ना ख़ोंदेम गोसांई सारीम,
सारीमदो सांरीमदो।
इन्ना ख़ोंदेम गोसांई सारीम
हियो ही दल दल-2

तेला ढवसा गोसांई, मक्का ढवसा
मक्का ढवसा गोसांई, सारीम दोः
इन्ना ख़ोंदेम गोसांई सारीम
हियोही ही दल दल-2
ठिलया झरा भईयारे
गिठया झरा गठिया झरा गोसांई, सारीम दो-2
इन्नां ख़ोंदेम गोसांई सारीम
हियोही ही दल दल - 2
मुनो झरा भईयारे बोथा झरा
बोथा झरा भईयारे सारीम, सारीम दोः
इन्ना ख़ोंदेम गोसांई सारीम,
हियो ही दल दल - 2
खईयन एड़ओन भईयारे, खेन्ड़ोन एड़ओन
खेड़ोन एड़ओन भईयारे सारीम दोः
सारीम दो सारीमः
हियो ही दल दल - 2
खेः-रन एड़बोत, चुट्टिन पुदुगओतः
सुड़ी ननोत मो-ख़ोत मो-ख़तोओम सारीमः
सारिन्दा गोसांई सारिम कोय
हियो ही ही दल दल - 2।।

12. चानुम 2 नैगायो,
बे-लर लेक्खआ बेंजरआ लगदय
ख़द्दी पईरी बीरि नैगायो,
बे-लर लेक्खआ बेंजरआ लगदय।

13. नासगो मदगी लट्ठा,
ददासिन बुड़ावाचकी
तुम्बा नू झरा लचकी दो,
ददासिन नीनिम बुड़ावाचकी।

14. एरखो एकाने रओय
पंईया राजी नू बीसरआ लगदी।
नासगो एकासे ननोन,
बबस ख़रा कोड़हे खिसारआ लगदस।।

15. ताची मामू राजी कानर,
परता राजीनूं काला लगनर।
हाएरे भला रसिका जों-ख़र उरखर
रिझवार पेल्लर गने काला लगनर।
हाएरे भला सोना गहि टइंड़िन ओच्चर,
रूपा गहि बेनयन हूं होआ लगनर।
हाएरे भला पोकोल किचरिन ओच्चर,
रूपा गहि गमछन होआ लगनर।
हाएरे भला चौंरादिम अम्बरा केरा,
सोना गहि घुघरिद का लगी।
हाएरे भला कलाको तिलासार पगन होअर की कला,
भईया फुदना कट्टका रई।
युराप राजी खरा गेच्छा टोडंगदिम रई,
हाएरे भला टोटंगदिम रई, रने बने रई।
डहरे काली बिजो बने काली,
हाएरे भला एवसेरका पेल्लो रनी मंजा
रने बने ख़द्दासिन बिद्दया।।

16. ने निंग्गन केबोर कोय
ननाहेद्दे 2 नूं रःदीः
ताची मामू केबोर कोय
ननाहेद्दे 2 नू रःदी।

17. काला बरा अगुवा
निंग्है बाते लग्गोका मला।

सीते 2 कला अगुवा
निंग्है बाते लग्गोका मला।।

18. कपड़ेन्ता सिन्दरी कोय पेल्लो जनम जुगा रओः
तिरयो बिन्डयो एंव उल्ला रओ।
पईरी बीरि सिन्दरी कोय पेल्लो जनम जुगा रओः
तिरयो बिन्डयो एंव उल्ला रओ।।

19. ची नयंग कोंको तुम्बा
ए-न नयंग जोगी मना कादन।
पईरी बीरि ची नयंग कोंकों तुम्बा,
ए-न नयंग जोगी मना कादन।।

20. नीन भईया महतो जौँ-खय
निंग्हें धारना पेल्लोन सिंगार ननाा।
पईरी बीरि महतो जौँ-खय
निंग्है धारना पेल्लोन सिंगार ननाा।

21. तुम्बाका झरा लच्ची दो
एकासे नीन अदिन पुराबओयः
पाहीयाए खरा बग्गे बरचय,
एकासे नीन अदिन पुराबओय।

22. एबसेरका पेल्लो रनी मंजा,
टोडंग मझीनूं ख़द्दासिन पाकियाः
ख़ाख़द खरा कोड़हे बाचा
परता राजीनूं ओच्चा दरा केराः
किर्रा बिड़दा आनकीदिम केरा।

23. कला भईया सपेड़ारआ बरा
राजिन्ता डमुवा खरेख़ा लगी
पईरी बीरि सपेड़ारआ बरा
राजिन्ता डमुवा ख़ारेख़ा लगी।

24. बे-ल झण्डद चोचा केरा
राजिन्ता डमुवद ख़रेख़ा लगी
पईरी बीरि उरखा लगनर
झमर-झमर घुघरिद ख़ारेख़ा लगी।

25. चिरो चिल्पी पोक्कोल किचरी,
दैंवता लेखेरदय भईया बिड़ी अरगो बीरिः
होरे हरिना चलि गेला
काहेरे तीरा छूटाल जाएला।

26. पांच भईयर बअदी कोय पेल्लो
पांच भईयर निंग्है एन्देर ननोर रे
हेओन अरा लवओन कोय पेल्लो
पांच भईयर निंग्है एन्देर ननोर।

27. एका लेक्खआ उरबय भईया,
ख़द्दी चन्दो निंग्गदन बी-सा लगदयः
धना गड़ा उरबय भईया,
ख़द्दी चन्दो निंग्गदन बी-सा लगदय।

28. तूरी भंडारी दईगो,
खूड़ी नूं केबा लगीः
ओन्टा ढिबागे दईगो,
खूड़ी नूं केबा लगी।

29. कमआ लगी हो कोरोंजो बिन्डयो
कमआ लगी अम्बारू पेल्लो
जौन्दख़द्दिस होआ बरचस
कोरोंजो बिन्डयो कमआ लगी अम्बारू पेल्लो।

30. डहू लबआ कला हो बाचकन
बारका ईज्जो हों अन्नेम रई,
पईरी बीरि कला बाचकंन
बरका ईज्जो हों अन्नेस रई।

31. बनेया हाथी बरचा
जीनो पोखारी कोय हिन्डोर मनी
पईरी बीरि हाथी बरचा
जीनो पोखारी कोय हिन्डोर मनी।

32. ए-रा सिबा पाड़ाको बी-ड़ी अरगा लगी,
ख़द्दी पईरी पाड़ाको बी-ड़ी अरगा लागी।

33. आली चेंम्प बरआ लगी,
कुम्बानू कोय कोरअय कोय पेल्लो
पईरी बीरि बरआ लगी,
कुम्बानूं कोय कोरअय कोय पेल्लो।

34. ओरमर चोरोक्को केरर,
नीन ऊंढोरी उलान रःदी,
पईरी बी-ड़ी अरगो बीरि चोरोक्को केरर
नीन कोय ऊंढ़ोरी उलान रःदी।

35. आलासिन मला दुसएन
जुड़ी ए-रा ए-रा पड़ेगा लगेन

आलरगे मैंना जूड़ी
जुड़ो ए-रा ए-रा पड़ेगा लगेन।

36. सुगा कैलगा जनम मला नुकरीई कोय,
हाएरे एन्देर ननोनः
भेज्जा बे-चो बीरि जनम मला नुकरीई कोय,
हाएरे एन्देर ननोन।

37. जम्बू डंहूड़न लवआ ददा
बिन्डयो कमओन,
निंगुसन भेज्जा बें-चोनः
जम्बूं डहूडन लवआ दादा
बिन्डयो कमओन।

38. समियागो समय दिम केरा,
समियागो गुलाईचीन एन्देर ननोन
समियागो समय दिम केरा,
समियागो गुलाईची झरिया दिम रई।

39. बरगी बरओर कोय पेल्लो
कूटि धारानूं अम्बोय बे-चा
बन्दी ननोर कोय पेल्लो,
कूटि धारानूं अम्बोय बे-चा।

40. एकईयन्ती बरदी कोय पुनिया,
होट होटोरआ हुकन ओना लगदी,
लइयोन्ती बरदी कोय पुनिया,
होट होटोरआ हुकन ओना लगदी।

41. करिलन्नाथ माठ मैंया,
सोना गहि कंड़ेला झिल मिलरआ नुकरआ लगी,
कल पेल्लो ए-रर बरय,
सोना गहि कंडेसा झिलमिलरआ नुकरआ लगी।

42. बे-लस गहि सोना गहि कंडेसाः
झिलमिलरआ नुकुरआ लगीः
चेंड़ा पेल्लो मार लवचा,
झिलमिलरआ नुकरआ लगी।

43. तूसा डहरेनूं भईयारे,
जूड़ि कंड़ेसा उरख़ादे,
पईरी बीरि जूड़ि कंड़ेसा,
जूड़ि कंड़ेसा उरखा दे।

44. बारहोय घरा परतानूं अयंगो
जिया साला लगीः
ओंदिम खो-रे अड़खा गेम अयंगो
जिया साला लगी।

45. चेते झड़ी कोय पेल्लो,
रासे रासेरआ बरआ लगी,
गिरगोन ओड़ओय कोय पेल्लो,
हरिया ईंज्जो बरआ लगी,
पईरी बीरि कोय पेल्लो,
गिरगोन ओड़ओय कोय पेल्लो।

46. झरा बोड़एन अम्बर चिआ,
कुड़ोपी डन्डे बरआ लगी।

47. पोसओय का मला कैला
जूड़ि पेल्लो हेद्दे हेद्देनूं रई,
पईरी बीरि पोसओय का मला कैला,
जूड़ि पेल्लो हेद्दे हेद्देनूं रई।

48. हुदी कोय भौंरो पेल्लो
बलि कों-ड़ानूं बल्लू रई,
जनी सिकार कार्दी होले,
बलि कों-ड़ानूं बल्लू रई।

49. बांस पहाड़ उल्ली हुदी कोय भौंरो पेल्लो,
कादी का मला,
हाए पईरी बीरि कांदी होले,
बांस पहाड़ परेता ओला लगी।

50. पेल्लो मंडरका गड्डीनूं
बारहोय छिपा लदरकी रई,
हाए पईरी बीरि पेल्लो,
बारहोय छिपा कोय लदरकी रई।

51. कसमार मेरले पेल्लोन
हलमान बन्दरा लवआ लगी,
हाए पईरी बीरि
हलमान बन्दरा लवआ लगी।

52. तूरीडिह तूरी मुक्का,
रंए रंएरआ तूलिन धुनआ लगी,
हाए पईरी बीरि,
रंए रंएरआ तूलिन धुनआ लगी।

53. झम झमरआ तो-कदय
पेल्लो निंग्है ए-रा लगी,
ख़द्दी पईरी तो-कदय,
पेल्लो निंग्है ए-रा लगी।

54. कुम्भूरिया पेल्लो कोय
तेताली मूलीनूं मसेड़ा रई,
हाए पईरी बीरि कुम्भूरिया पेल्लो कोय,
तेताली मूलीनूं मसेड़ा रई।

55. कंचिता गेले झिका जमेरा,
धीरे-धीरे बरोया तोकय भईया,
पईरी बीरि कंचिता गेले झिका जमेरा
धीरे-धीरे बरोया तो-कय भईया।

56. खड़ऊ अड्डो केचा कोय पेल्लो,
खोंगासो तेताली बनाल रई,
हाए पईरी बीरि खड़ऊ अड्डो केचा कोय पेल्लो
खोंगसो तेताली बनाल रई।

57. हंसी ननोय ठठा ननोय
हु बात भईया मला मनो,
हाए पईरी बीरि हंसी ननोय,
हु बात भईया मला मनो।

58. धरओय-धरओय भईया मला धरओय,
हू बाते भईया मलाम मनो,
हाए पइरी बीरि धरओय-धरओय मला धरओय,
ई जिनगीनूं भईया मलाम मनो।

59. नीन भईया महतो जोँ-ख़य,
निंग्है धरना पेल्लो झकामका बरआ लगी,
हाए पईरी बीरि नीन भईया महतो जोँ-ख़य
निंग्है धरना पेल्लो झकामका बरआ लगी।

60. फुलवारी गेले रजा,
फुला नहीं सबै शोभय
पगारी शोभय,
हाए पईरी बीरि फुलवारी गेले रजा,
फूला नहीं सबै शोभय
पगारी शोभय।

61. छोट भईयारे वे-ल भरिया
नीन अम्बोय काला,
बे-ल भरिया ढिबा चिरखी,
नीन भईया अम्बोय काला।

62. कोरोंजो डहुड़ा नीम डहुड़ा लवओर कोय,
तीन खंड़ी धूर उड़ी बओन,
हाए पईरी बीरि नीम डहुड़ा लवओर कोय,
तीन खंड़ी धूर उड़ा बओन।

63. खिलबी खिचड़ी के दुबा पतड़ा
ने निंग्गन उईयो कोय खचा लिन्डो,
हाए पईरी बीरि दुबा पतड़ा
ने निंग्गन उईयो कोय खचा लिन्डो।

64. पारी बन्ना धोका धोका,
भर लिन्डी सीड़ो कोय पेल्लो,

हाए पईरी बीरि पोरो बन्ना धोका धोका।
सर लिन्डी सीड़ो कोय पेल्लो।

65. बिंजकन्ती बरदी कोय पेल्लो,
रायमला तूसा कोय नुकुरआ लगी,
हाए पईरी बीरि बिंजकन्ती बरदी कोय पेल्लो
रायमला तूसा कोय नुकुरआ लगी।

66. तंगआ-2 मुक्कारिन भईया भेज्जा धरनर
पईरी बीरि जोँ-ख़र गहि पतियार केरा
तंगआ-2 मुक्कारिन भेज्जा धरनर।

67. बे-चा बलदन बे-चा बलदन भईया,
भेज्जा धरओय का मला,
ख़द्दी पईरी बीरि बे-चा बलदन
भेज्जा धरओय का मला।

68. मलानुम-2 पेल्लो बरआ लगी हो,
बारह भसुबा पेल्लो,
पईरी बीरि भेज्जा बे-चागे बरआ लगी हो,
बारह भसुवा पेल्लो।

69. कोटाम पेल्लोद भईया,
डन्डा उदुर उदुर कोटाम अरगा लगी,
पईरी बीरि भेज्जा बे-चागे,
डन्डा उदुर उदुर अरगा लगी।

70. दुसमन चिरा चिल्पी सेरेत अनाजबचा कोय पेल्लो,
हालेका कोरओ बीरि सेरेत अना लवचा कोय पेल्लो।

71. छोटे एकन चिरा चिल्पी पेल्लो,
दरबारनूं खतेरा लगी,
पईरी बीरि चिरा चिल्पी पेल्लों,
दरबारनूं खतेरा लगी।

72. जम्बू डाड़न लेवोखआर चिआ ददा
बिन्डयो कमओनः।

73. दुयोरे चितिर कोटा,
अड्डो खूड़ीनूं मेना लगीः
ऊईया कालो बीरि भईया,
खूड़ीनूं अड्डो मेना लगी।

74. गोपीनाथ बे-लस कोय,
हाथी मेंया चौंरन डोलाबःदास,
पईरी बीरि बेलस कोय,
चौंरन डोलाबःदस।

75. गुचा भईआरे निंग्हैं ईर
पईरी बीरि निंग्है ईरका मल
एंग्है ईरका राजीनूं कालोत।

76. छोट भईयारे बे-ल भरिया नीम अम्बोय काला,
पईरी बीरि बे-ल भरिया नीम अम्बोय काला।

77. दुयोरे बापे बेटा,
काला लगनर कोड़ा राजी
जीना मरनागे काला लगनरः
पईरी बीरि कोड़ा राजी
जीना मरनागे काला लगनर।

78. गोला अड्डो चौंरा अड्डो
भईयासिन उईया चिओय का मलाः
पईरी बीरि चौंरा अड्डो
भईयासिन उईया चिओय का मला।

79. आलसिन मला दुसएन
जूड़ो ए-रा ए-रा परेया मनेनः
पईरी बीरि लेयोख़आर चिआ ददा,
बिन्डयो कनओन।

80. चम्पा तोक्खा केरा जगमगी पेल्लो,
भांड़ो जतरा गे जमगमी पेल्लो,
चम्पा तोक्खा लगी।

81. चो धिया बिजिया,
राए मला तूसागा नुकरआ लगी
पईरी बीरि बिज्जिया,
राए मला तूसागा नुकरआ लगी।

82. परता मैंया हकेदन जूड़ि
मुरतो चवड़ानूं मिन्दरीई का मलाः
पईरी बीरि हकेदन जूड़ि,
मुरतो चवड़ानूं मिन्दरीईका मला।

83. उला कोटाम पेल्लोद,
बला पंएंड़ागा उलाम रईः
पईरी बीरि एन्देर-2 भेज्जा बे-चो,
बला पएंड़ागा उलाम रई।

84. नीन कोय वेस सरम पेल्लो,
दुदही जुर्रना गूटी बी-चदी
पईरी बीरि अरगो बीरि,
दुदही जुर्रना गूटी बी-चदी।

85. चिआ चम्पा मुद्दिन एंग्हैन,
एन्देर भेसे ससरईर कालोन,
झरा मल्ला गुन्डा मल्ला,
एन्देर भेसे ससरार कालोन।

86. भौंरो बेदालानूं कोय
जूड़ि ढोल डमुवा खरखा लगी।

87. हाएरे एंग्है मे-त मलका,
चारियो कोंड़ा एड़पा जोरो मनि
पईरी बीरि मे-त मलका एड़पा जोरो।

88. भगिना पिसा मंजओय चिरो चिल्पी,
ओन्द बी-ड़ी डहु लवआ कला,
पिसा मंजओय चिरा चिल्पी।

89. कमआ लगी कोरोंजो पेंड़ेरे,
कमआ लगी अम्बारू पेल्लो;
जौंदख़द्दिस होआगे बरचस
कमआ लगी अम्बारू पेल्लो।

90. कोम अड़खा झरियानूं पेल्लो रई,
गुलांईची झरियानूं बातन बना बई,
पईरी बीरि पेल्लो रई,
गुलांईची झरियानूं बतान बना बई।

91. ओन्दाको मुद्दी चिःदन,
मुद्दी ए-रा-2 धिरिजा ननोय;
चान मुन्द कोड़ा कादय,
मुद्दी ए-रा-2 भईयारे धिरिजा ननोय।

92. गुन्डुम गुमा मूंया चोचा
परेता मैंया;
पईरी बीरि मूंया चोचा
परेता मैंया।

93. ए-रा जूड़ि बिछरआ हो
किचरी कोलरआ लगी,
कोलरआ चिआ जुड़ि खचरा चिआ हो
अक्कु जूड़ि समय दिम केरा।

94. की-ड़ा कीड़ा बःदी कोय पेल्लो
रजी की-ड़ा एंव उल्ला रओ;
टोंड़सिन धरओय कोम अड़ख़ा तोक्खा कालोय
राजी की-ड़ा एंव उल्ला रओ।

95. ख़ोसरा पक्खे नयो
बिटी बिदा अम्बके चिआ;
बोंग्गोन कि बरओन नयो
जूड़ि डोंगा लग्गोका मला।

96. भईया बहिन रहचर बारी
ओन्टे बन्दरा पो-सरः
बन्दरा गे कुड़ना मन्डी चिच्चर बारी
बन्दरा अलखा लगीः

बन्दरा गे बासी चिच्चर बारी
बन्दरा नरियाः लगी।

97. ए-रा तो भगिना राईमला तू-सेंगा नुकराः लगी
बिज्जया पुत्तया राईमला तू-सेंगा नुकराः लगी।

98. एंगन अम्बा आसे नना
ख़द्द माख़ो रःदन
बिज्जों बीरि भेजा बे-चोन हो
बिज्जो बीरि भेजा बे-चोन;
पईरी ना पुतबीरि अम्बा आसे नना
ख़द्द माख़ो रःदन हो
बिज्जो बीरि भेजा बे-चोन।

99. चालि बलिनूं पूंई जोड़ा बाचअन
नासगो केबोयका मला;
केबाहूं कोबोन को-ड़ा हूं को-ड़ोन
एरखो सखुनगा मनोय।

100. काला बरा भईया रे मोरा
पेल्लो निंग्है हीरा लेक्खआ रई;
पईरी बीरि काला बरा भईयारे मोरा
पेल्लो निंग्है हीरा लेक्खआ रई।

101. हाए निंग्गदा कुम्मचारी लेखरी
नाव में लगा मगा का मल हो;
लग्गा गा लग्गो हो
कला जौनख़द्दी बेद्दागे मनो।

102. हू खूड़ी अम्बा काला बरा
जोँ-खासिन गुंगुती कुल्लियर
रांड़ी-पच्चो तंगदा
जोँ-ख़ासिन डबनाती डबचर।

103. नीन भटू कूनजरिया
एंगदाईन कूमया नन्दयः
नम्बारो पेल्लो करने
एंगदाईन कूमया नन्दय।

104. खे-ल खीनदकय भईया ललु
मुक्का खीन्दका बेसे लग्गी;
खे-ल़ खोट्टरा भईया ललु
मुक्का केरा बेसे लग्गी;
पईरी बीरि ख़े-ल ख़ोट्टरा भईया ललु
मुक्का केरका बेसे लग्गी।

105. भईया बहिन रहचर खने
ओन्टा बन्दरा पोसअर हो
ओन्टा बन्दरा पोसअर;
बन्दरागे बासी मण्डी चिच्चर खने
बन्दरा भसियाः लगी हो
बन्दरा भसियाः लगी
बन्दरागे कुड़ना मण्डी चिच्चर खने
बन्दरा अलखा लगी हो
बन्दरा अलखा लगी।

106. गोंड़ गोंड़िन रहचर भईया बहिन रहचर
ओन्टे बन्दरां पोसअर;
बन्दरागे ची चिआ बासी मण्डी
बन्दरा ख़न्दराः लगी।

107. धीरेम तोकोय भेजोली
ख़रा मा-ख़ा रई;
उन्दीम बेड़ा केरा
ख़रा मा-ख़ा रई।

108. गुचाहो अरुनिम होआ पीसा हो
की-ड़ा तुरू सोकोय मनोय;

109. एकैया कादय जूड़ि रंगीला
गाड़ी मैंया कड़िरका रई;
ससरार कादय जूड़ि रंगीला
गड़ी मैंया कड़िरका रई।

110. मलो कौन होअर लवआ
सुरीलीनूं नन्दन रसाबाचस
खद्दी पईरी होअर लवआ
सुरीलीनूं नन्दन रसाबाचस।

111. एंग्है जूड़ि पेल्लोनगा
बंकी खाड़ बोहाबाचा;
की-या बोहाबाचा मैंया बोहाबाचा
बेद्दोन होले चुन्दीनूं धरओन।

112. एका पेल्लो अड्डो ख़ापी
परता हेद्दे हेद्देनूं हुई रे भाई;
चेंड़ा पेल्लो अड्डो ख़ापी
परता हेद्दे हेद्देनूं हुई रे भाई।

113. अनय कोय परबतिया
एन्देर ईरकी कोड़ा कादी;

इसानुम जूड़िस, इसानुम पाँतिस
एन्देर ईरकी कोड़ा काद्दी।

114. एन्देर पूँपन मे-झरेकी दईया
बन बरहा बेसे लवकारकी बरआ लगदी;
नौर पूँपन मे-झेरकी दईया
बन बरहा बेसे लवकारकी बरआ लगदी।

115. अक्कुनगा अयो बिटी बिटी बःदी
पिसा अयो ससुरार तईयोय;
माघ महिना बरआ चीतो अयो
गाड़ी अरगोन कोड़ा राजी कालोन।

116. परता कोँ-ड़ा की-ड़ा मंजा
हाएरे मुक्का चाल मला नन्दी;
पईरी बारि होआ पीसा हो
की-ड़ा तुरू सोंकोय मनोय।

117. चुंजा किरकी कोय पेल्लो
चुंजा टंगरानूं गुनाईन लगदी;
ख़द्दी पईरी किरकी कोय पेल्लो
चुंजा टंगरानूं गुनाईन लगदी।

118. चानुम चानुम नयगायो
बे-लर लक्खआ बेंजरा लगदय;
ख़द्दी चन्दो पईरी नयगायो
बे-लर लेक्खआ बेंजरा लगदय।

119. हरियारअय कोड़ा का लगदय
मोख़रारकय बरआ लगदय;

जूड़ि पेल्लोन हिया बाचकय
मोख़रारकय बरआ लगदय।

120. एका लेक्खआ सुहर पेल्लो
ढिबन निंग्हैन किरताः लगी-2
खरा कोड़े सुहर पेल्लो
ढिबन निग्हैन किरताः लगी-2।

121. छतर धरनुम बे-लस
राजिन ए-राउरखा लगदस;
राजीगा डमाडोल मंजा
अंवगे राजिन ए-रा बे-लस उरखा लगदस।

122. कहल बातन मला मिन्दी
गुन्डरी बीअन तिरखा लगदी;
ख़द्दी पईरी मला मिन्दी
गुन्डरी बीअन तिरखा लगदी।

123. नीन उरबय झरा बोड़ए ओन्दय
ख़ई ख़े-ड़ो एन्देरगे अन्नेम रई;
ख़द्दी पईरी झरा बोड़ए ओन्दय
ख़ाई ख़ो-ड़ो एन्देरगे अन्नेम रई।

124. बी-सागा बी-सकी अयो
तनी एकन बलकी बी-सा;
एन्देर बेसे बल्लोन बिटी
देवर दाईज अड्डानूं बीसयन;
देवर दाईज मन्नुम एन्देर मनो अयो
एड़पानूं भूजल भंग मल्ला;
आं-ड़को दाली आं-ड़को तीखिल

ने-का चिओन ने-का मला;
साईस ससुर कत्थन मेनोन
चनबे चिता कत्थन मेनोन।

125. झाईल परतानूं भाईयारे
हाथी अरेगा लगी
घोड़ो अरेगा लगी;
अरगा चिआ जूड़ि
अरगा चिआ रे
राजी ए-रा अरगा लगी
देशे ए-रा अरगा लगी।

126. झिमिर झिटा चें-प पूंईया लगी
समदो एन्देगे चांई;
समथिस गे जड़ा बन्ना कुल्ला रई;
समदो एन्देरगे चांई।

127. ओन्दाको सुकरा मुद्दी एंग्हैन जोगाबःके
हलेका कोरओ बीरि मुद्दी एंग्है ख़तरा,
मुद्दी एंग्हैन जोगाबःके।

128. बरोया पेल्लोको
तेताली मूलीनूं मसेरत ननी;
पईरी बीरि पेल्लोको,
तेताली मूलीनूं मसेरत ननी।

129. बना राजी बनाल पेल्लो
हाएरे डिन्डम रई;
पईरी बीरि बनाल पेल्लो,
हाएरे डिन्डम रई।

130. ढिबानिम होआ रोतड़े होय,
निग्गुसन मला रओन;
पईरी बीरि ढिबानिम होआ,
निंग्गुसन मला रओन।

131. गुचा भईया काओत,
कोड़ा राजी काओत,
चौंर खेंं-दागे काओत;
पईरी बीरि काओत कोड़ा राजी,
चौंवर खेंं-दागे काओत।

132. ओंदिम खो-रे डिम्बो बोहा,
पेल्लो मैंया हिलोडोलो मनी;
एरा-2 जिया साली,
पईरी बीरि पेल्लो मैंया हिलोडोलो मनी।

133. रकम पाड़ोय बोड़ो पाडू
ख़रा राजी मेन्दरआ लगी;
पईरी बीरि बोड़ो पाडू
खरा राजी मेन्दरआ लगी।

134. कोड़े डंन्डीन पाड़ा को पाडू
पचबालर ए-रागे बरनर;
पईरी बीरि पाड़ाको पाडू
पचबालर एं-रागे बरनर।

135. ने-ख़य-2 अयो हूं
ने-ख़य-2 बबा हूं,
ने-ख़य-2 एके गोटा भईयारे,
मोरा आंखि भरि लोर कांदय।

136. काला बरा भईयारे बानन बनाबआ,
ख़द्दी पईरी भईयारे बानन बनाबआ।

137. छाएला सिंगारी पेल्लोन
काला चिआ लोहोरदगा,
बिटिला खैं-दागो,
काला चिआ लोहोरदगा।

138. बोदा बारी बन्ना चखरदन,
हाड़ी कला भईयारे मोरा;
ख़द्दी पईरी बन्ना चखरदन,
हाड़ी कला भईयारे मोरा।

139. लेसेर-2 बन्ना चख़रदी
नुंजओ बीरि पेल्लो हारयो! हारयो!! बःदी,
ख़द्दी पईरी बन्ना चखरदी;
नुंजओ बीरि पेल्लो हारयो! हारयो!! बःदी।

140. बिज्ज बीनको बःदी कोय,
घड़ी बीनको अरगा लगी;
पईरी बीरि बःदी कोय,
घड़ी बीनको अरगा लगी।

141. बिज्जो बीरि बरदी कोय,
मला धरओन केबोर अरा चिओर;
ख़द्दी पईरी बरदी कोय,
मला धरओन केबोर अरा चिओर।

142. ऊगिन धरओय उरबायो
चेंड़ा भरिया कालोय;

सम्बलपुरे उरवायो,
चेंड़ा भरिया कालोय।

143. ऊईया कादय होले,
बबुसिन चोंख ए-रर कला;
पईरी बीरि कादय होले,
चोंख़ ए-रर कला।

144. भौंरों पेल्लो बरआ लगी,
छोटे-2 बिन्डयो रई;
पईरी बीरि बरआ लगी,
छोटे-2 बिन्डयो रई।

145. आली चैं-प बरआ लगी,
कुम्बानूं कोय कोरअय कोय पेल्लो;
पईरी बीरि बरआ लगी,
कुम्बानूं कोय कोरअय कोय पेल्लो।

146. टट्टी तीखिल बी-सका ढिबा उरबायो
एकसन रःदय;
पईरी बीरि बी-सका उरबायो,
एकसन रःदय।

147. किर्र-2 कोय बःदन,
बड़े दुखेनूं किर्रा लगदी;
पईरी बीरिनूं बःदन,
बड़े दुखेनूं किर्रा लगदी।

148. ढिचुवा जूड़ो जौं-ख़यो,
मनखा उलाम रई;

भेज्जा बीचनुम रीझिरकय,
ढिचुवा जूड़ो जोँ-ख़यो।

149. नम जुरतू बरई कोय,
चिरा चिल्पी बिलचा लगी पेल्लो;
पईरी बीरि नम जुरतू बरई कोय
चिरा चिल्पी बिलचा लगी।

150. चाला बड़ानूं नयंगो,
चाला बड़ानूं पंड़की रई
पईरी बीरि धरम ननोए दो नयंगो
चाला बड़ानूं पंड़की रई।

151. एका झरियानूं कोय
तेलेंगाय कुहु बझाबःनय;
पईरी बीरि कुहु बझाबअनय
तेलेंगाय कुहु बझाबअनय।

152. कुहु दरा ढिचुवा संगेम रई
अधा मा-ख़ा तरा मा-ख़ा,
कुहु दरा ढिचुवा संगेम रई।

153. अड्डो बिछिरआ कादय हो जोँ-ख़यो
उलता बलि अम्बके काला;
उलता बलिनुम पन्डरी पेल्लो रई,
उलता बलि अम्बके काला।

154. झालर धोती बिन्डो पागा,
साड़ी पेल्लो हिलेरआ लगी;

पईरी बीरि भेज्जा बे-चागे,
साड़ी पेल्लो हिलेरआ लगी।

155. ने लवचा डुम्बारी तू लवचा,
नीन भगिना तुरकय रःदय;
पईरी बीरि पेल्लो लवचा,
डुम्बारी तू लवचा,
नीन भगिना तुरकय रःदय।

156. ने लवचा डेमडेमे चिगालोन,
टुंगरी मैंया बिडिरकी रई;
पईरी बीरि पेल्लो लवचा डेमडेमे चिगालोन,
टुंगरी मैंया बिडिरकी रई।

157. हाएरे मुक्का हराहि,
डुम्बारी गेम काला लगी;
पेल्लो मुक्का हराहि
डुम्बारीगेम काला लगी।

158. तिरयो बीन्डयो एंव कोय उल्ला रओ
कपड़ेन्ना सिन्दरी कोय जनम जुगा रओ,
तिरयो बीन्डयो एंव उल्ला रओ।

159. हाएरे कलौ दुनिया
मुक्का मे-त संग्गेम भेज्जा बे-चनय;
पईरी बीरि मेतर गहि पंतियार केरा,
मुक्का मे-त संग्गेम भेज्जा बे-चनय।

160. एंग्गाहूं चिआ ददा बकिला टंईयान,
निंग्गुसन भेज्जा बे-चोन;

पईरी बीरि चिआ ददा बकिला टंईयान्;
निंग्गुसन भेज्जा बेचोन।

161. बिन्डयो कमअर चिआ ददा
निंग्गुसन भेज्जा बे-चोन;
पईरी बीरि बिन्डयोन कमअर चिआ ददा,
निंग्गुसन भेज्जा बे-चोन।

162. निंग्है फुदना निंग्है रेसेम,
गुईराम सोकओय मनि
ए-रा ए-रा जिया साली
ए-रा ए-रा जिया साली
दरा गुईराम सोकओय मनि।

163. झम झमरआ तो-कदय,
पेल्लो निंग्है ए-रा लगी,
पईरी बीरि तो-कदय,
पेल्लो निंग्है ए-रा लगी।

164. नीन पुना पेल्लो चेम चेमेरदी,
नाल तरा पेल्लो अम्बोय काला;
पईरी बीरि नाल तरा पेल्लो चिगालो र'ई,
नाल तरा पेल्लो अम्बोय काला।

165. चो लन्डी चुंजागे
बी-ड़ी अरगा लगी;
पईरी बी-रि चुंजागे,
बी-ड़ी अरगा लगी।

166. कला हो अक्कुन होआ,
की-ड़ातू सोकओय मनो;
पईरी बीरि अक्कुनिम होआ,
की-ड़ातू सोकओय मनो।

167. बासी गुलंईची कोय
धीरेम नुकरआ लगी;
पईरी बीरि अरगो बीरि
धीरेम नुकरआ लगी।

168. गुईरे बिरसा पाडू एकसन रःदय
बिज्जा बडुंग लगी
गुईरे एकसन रःदय।

169. पंडरू ख़ाख़ा मोख़ारो बकिला,
एकसन ए-रोय पंडरी पेल्लो;
पईरी बीरि ख़ाख़ा मोख़ारो बकिला
एकसन ए-रोय पंडरी पेल्लो।

170. झिन्तो पिटरीनूं कस्सान छोड़ायबओय चेंड़ा पेल्लो
सिन्दरी मनो बीरि कस्सन छोड़ाबओय चेंड़ा पेल्लो।

171. इदनन्ता पुना पेल्लो
मनि पोचगो लेक्खआ लेसेर मनि;
कप ए-रोय चेंड़ा पेल्लो,
मनि पोचगो लेक्खआ लेसेर मनि।

172. चो एरखो कुहु मेना
ख़रा गोड़हे कुहु चीं-ख़ा लगी;

पईरी बीरि कुहु मेना,
ख़रा कोड़हे कुहु चीं-ख़ा लगी।

173. अनाहो लन्डी जौं-ख़यो
ऊईया बलना लेक्खआ उलाम र:दय;
एड़पानूं उसांगी नाड़ीं
ऊईया बलना लेक्खआ उलाम र:दय।

174. दुसमन बरगी बरई
कोड़े-2 पेल्लोन बन्दी ननी;
मंड़ा तंग्हैन बस्सागे बरई,
कोड़े-2 पेल्लोन बन्दी ननी।

175. बांसा बना परता ऊली,
बदाली मुर्रना मुर्रा लगी;
मांड़ा तंग्हैन बस्सागे ऊली,
बदाली मुर्रनन मुर्रा लगी।

176. मुक्कन पका लवआ भईया,
मुक्का भई फूट ननी;
पईरी बीरि पका लवआ भईया,
मुक्का भई फूट ननी।

177. कादन-2 ब:दी कोय पेल्लो,
मेदेन्ता धूलि खेत्तय दरा कलय;
निंग्यो निम्बा केबोर कोय पेल्लो,
मेदेन्ता धूलिन खेत्तय दरा कलय।

178. गौड़ियासिन हेअर लवआ,
मोरोलीनूं नादन रसा बःदस;
पईरी बीरि हेअर लवआ
सोरोलीनूं नादन रसा बःदस।

179. बरहा बसुवा पेल्लो गहि किरा किचरी,
किरा किचरी कोलर'आ लगी;
पईरी बीरि भेज्जा बे-चागे बरई,
किरा किचरी कोलर'आ लगी।

180. पेल्लो ओन्दोरका कन्नन होआ भईयारे,
सेन्दरा टोंका;
पईरी बीरि झखहा माकन लवआगे होआ भईयारे,
सेन्दरा टोंका।

करम पूजा

करम झारखंड के उराँव आदिवासियों का दूसरा मुख्य पर्व है, जो प्रतिवर्ष भादो एकादशी को मनाया जाता है। रोपा-डोभा एवं कृषि-कार्यो से निवृत होने के बाद यह पर्व बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है अनेक कार्य विधियों और मनौतियों के बाद करमा की डाली लायी जाती है। उसे उराँव विधि-विधानों के अनुसार अखाड़ा में गाड़कर, उसके चारों ओर नृत्य -गान होता है। यह पर्व छोटानागपुर में ही नहीं बल्कि पूरे भारत के विभिन्न राज्यों में भी मानाया जाता है, खास तौर से झारखण्ड के आलावे बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश, उडीसा, उतर प्रदेश, त्रिपुरा, नेपाल, एवं बंगला देश में रहने वाले उराँव मुख्य रूप से मनाते हैं, साथ ही इनके सम्पर्क में रहने वाली अन्य जन-जातियाँ जैसे मुण्डा, खड़िया, संथाल, हो एवं सदान लोग भी करम पर्व बहुत धूम-धाम से मनाते हैं। आदि काल से ही आदिवासियों में प्रकृति पूजा, अपना विशेष स्थान और महत्व रखती है, क्योंकि प्रकृति ने अनेक कठिनाइयों में उनकी रक्षा की है। प्रकृति से हमारा अन्योन्याश्रय संबंध है इसके विपरीत हमारा जीवन व्यर्थ ही नहीं, असंभव है। करम पर्व का संबंध हमारे जीवन में कर्म के साथ प्रकृति से भी जुड़ा हुआ है जो जैसा कर्म करेगा उसको वैसा ही फल मिलेगा, करमा पर्व के शुरूवात के बारे में कई कथाएं प्रचलित है। स्थान एवं समुदाय विशेष पर थोड़ा बहुत भिन्नता अवश्य है किन्तु उराँव जाति के बीच प्रचलित एक कथा इस प्रकार भी कही जाती है।

कहानी

रोहतासगढ़ में उराँवों का राज्य था। इनके शासन काल मे शांति एवं सुख का साम्राज्य था, इसे देख तूड़कर दुश्मन सैनिकों ने राज्य पर अधिपत्य जमाने का प्रयास किया। ये दुश्मन उनकी नींद हराम करते थे, उन्हें अमन चैन से रहने नहीं देते थे जिसकी पुष्टि गीतों से होती है :-

करम राग

बरगी.बरगी भया आवे,
हरे आयो निंदा कैसे आवय,
हरे बाबा निंदा कैसे आवय।

वे जिस राज्य को जीतते या उस पर विजय प्राप्त करते थे, वहां सुन्दर स्त्रियों कुमारियों तथा सोने, चांदी, हीरे, धन-दौलत अन्य बहुमूल्य वस्तुओं को लूट कर ले जाते थे। करमा और धरमा उन दिनों दूर-दूर स्थानों पर जाकर व्यापार किया करते थे। ये अपने व्यापर पशुओं के साथ (लदनी बैल) व्यापार के सामानों को ले जा रहे थे। इनका व्यापार बहुत व्यापक था। करमा-धरमा दोनों सहोदर भाईयों में करमा और धरमा बड़े थे, जो व्यापार कार्यो में संलग्न थे। अन्य छोटे भाई कृषि एवं गृहस्थ कार्यो में निपुण थे।

एक गाँव में बूढ़ा-बुढ़ी रहते थे। उनकी नौ संतान थी। सात लड़के तथा दो लड़कियाँ। लड़कों के नाम करमा, धरमा, धनवा, रीझा, मंगरा, भंवरा, लिटा तथा लड़कियों के नाम गांगी और जौनी, दोनों जुड़वा थी। करमा सबसे बड़ा तथा लिटा भाईयों में सबसे छोटा था।

गीत- सातो भईया सातो करम गाड़य
सातो गोतनी सेवा कारय हो,
सातो गोतनी सेवा कारय।
भईया जे मांदर टांगय, बैनी जे चंवर बांधय,
डंडा पटोरा भुंईया लोराए हो,
डंडा पटोरा भुंईया लोराए।
सातो भाई रे सातो करम गाड़य,
सातो गोतनी सेवा कारय - 2
कोंएछा में फूला हाथ में सिन्दुरा,
चला जाहु करमा का सेवा - 2
सातो गोतनी उपासल करम के बुदा तरे,
सातो गोतनी पियासल रहलैं हो - 2
सातो भईया मांदर बजाए,
सातो गोतनी खेलय हो - 2
करम के सेवा करय हो,
सातो गोतनी पहिरल बकुली का पांख रे,
सातो भईया चौंरा डोलावय हो - 2
गोड़े घुघुर पहिराए हाथे में झाल रे,
करम के बुदा तरे खेलय हो - 2

करमा और धरमा व्यापारिक कार्य करते थे, इस कारण उन्हें देश दुनिया की खबर लगती थी। इसी क्रम में उन्हें पता चला कि दुश्मन सैनिक (तुड़कर) सदल. बल के साथ रोहतास पर चढ़ाई करने के लिए प्रस्थान कर चुके हैं। उन्होंने इसकी खबर रोहतासगढ़ के महाराजा को दी। खलबली मची, प्रश्न उठा कि राज परिवार की रानियों को कहां छिपाया जाय? विशाल फौज होने के कारण उसका सामना नहीं किया जा सकता है, अतः बचाने का उपाय किया जाय। इस विचार से सहमत होकर महाराजा ने क्षेत्र पिपरागढ़, पटनोंगढ़, छोटा हरदी नगर, चतरा गढ़, तामबोली, कैरो गढ़ और अनेक स्थानों से उरागन ठाकुरों एवं भूंईहरी जमीदारों को बुलाकर आपात बैठक की। साथ ही अपनी-अपनी रानियों एवं बच्चों को लेकर रोहतासगढ़ में बचाव के लिए जमा होने लगे। निश्चय हुआ कि सोन नदी के प्रपात के पास एक खोह में उनको छिपाया जाए। अतः राजा ने रानियों के साथ शिशु राजकुमार ननका राय के साथ सबों को उस स्थान पर छिपाने के लिए घोड़ों पर सवार किया। उन लोगों के साथ 'सईस' (घोड़सहिस) लोग भी गये और रानियों तथा राजकुमारियों के लिए खाने के सामानों जैसे चूड़ा, मकई, चावल तथा बहुमूल्य हीरा (मणि) रत्नों, जेवरों को लेकर घोंड़ों पर सवार हुए। छिपने के उस स्थान पर पहुंचकर घोड़ों पर आए सभी लोग करम वृक्ष के चारों ओर तीन चक्कर लगाकर उस वृक्ष की झबरीली डालियों से ढके गढ़े (खोह) में घुस गये। इसी की याद में करम पूजा के अवसर पर उपवास किये हुए युवक एवं युवातियों को कन्धे पर सवार कर (घुड़सवार का रूप) करम डाली के चारों ओर तीन बार चक्कर लगाया जाता है। घोड़े अपना मूत्र-त्याग कर सुरक्षा की रेखा बनाये जिसकी यादगारी में आज भी करम डाली के चारों ओर लोटे का पानी गिराया जाता है। करम वृक्ष झबरीला था, पेड़ के नीचे अंधकार सा लगता था। जहां से प्रकाश अंदर आता था वहां जंगली झाड़ियों से बंद कर दिया। प्रकाश पाने के लिए रानियों ने हीरे के प्रकाश से अपना काम चलाती थीं। हीरे के प्रकाश में ही खाना-पीना करती थीं हीरे का प्रकाश बाहर न जा सके इसके लिए वे हीरे को ढक कर रखा करती थीं हीरे की पुष्टि इन गीतों से होती हैः-

गीत - आखरा छोलाले राजा बारी भितारे
करमा गाड़ले बीच खोरी हो,
करमा गाड़ले मझ खोरी ।

करमा का बुदा तरे डला भरि सोनावा,
बैनी दिया न बारे हो बैनी बाति न बारय।
करमा का बुदा तरे डला भरि हिरावा,
बइनी दिया न बारय हो
बइनी बाति न बारय।'

हीरे के प्रतीक के रूप में आज भी करम पूजा के अवसर पर दीपक को सरिपन पत्ती से ढंका जाता है। इसी दीपक के प्रकाश से पूजा सम्पन्न होता है। रानियाँ अपने साथ शिशु राजकुमार को भी गोद में लेकर उस खोह में सात दिन, सात रात थीं। इसके रोने की आवाज को आपस में बातें करते हुए गीतों के लय द्वारा युवतियाँ कहती है कि करम का डउड़ा में शिशु आपका रो रहा है।

गीत- करम डउड़ा नू पेलो कोय,
बबु निंग्हय चिंख़ा लगी रे - 2
पेलोदिम तंग्गियो जोंखासिम तम्बस,
बबु निंग्हय चिंखा लागी - 2

इसी राजकुमार के प्रतीक के रूप में उपवास करने वाली लड़कियाँ खीरा को दउड़ा में रखकर उपवास करती हैं और शिशु राजकुमार के भविष्य की कुशल कामना करती हैं। साथ ही भविष्य में खीरा और कोंहड़ा जैसा बेटा प्राप्त करना चाहती है। पुत्र प्राप्ति के लिए व्रत रखती है।

दुश्मन सैनिक (तुड़कर) छिपे राजपरिवार को खोज न सके। जिस करम वृक्ष के झुण्ड में रानियाँ छिपी थीं उस स्थान को शत्रु लोग चारों ओर से घेर लिए थे और कहने लगे कि रानियाँ कहाँ छिपी हैं? सैनिकों ने मशाल जलाकर चारों ओर रानियों की खोज की परन्तु खोज नहीं सके। सामने जो युवक मिले उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। जो व्यक्ति अपने जान की रक्षा करना चाहा, उन्होंने बताया कि रानियाँ जंगलों में छिपने के लिए गई है, किधर गई हमलोगों को मालूम नहीं। तब शत्रु लोग जंगलों में रानियों की खोज-बीन करने लगे परन्तु उन्हें खोज नहीं सके और अन्यत्र प्रस्थान कर गये। रानियाँ उसी करम वृक्ष के नीचे सात दिन, सात रात

बितायीं। जब शत्रुओं ने वहाँ से अन्यत्र प्रस्थान किया तब राजा ने रानियों को लाने के लिए अपने नौकरों और घोड़सहिसों को भेजा। सभी रानियों राजकुमारियों शिशुओं एवं सामानों को लेकर वापस आये वापस आने पर राजा ने अपनी रानियों एवं राजकुमारियों से मालूम कर लिया था कि आप लोग करम वृक्ष के नीचे खोह में थे इसलिए इस घटना की यादगारी में सभी मिल.जुलकर करम वृक्ष की पूजा करो। इस करम वृक्ष की पूजा करो। इस करम वृक्ष की छाया में रहकर आप सबों के प्राणों की रक्षा हुई है। इस करम वृक्ष की पूजा करोगे तो अपने वंश एवं धन-सम्पति की रक्षा होगी।

पहान (नैगस) के साथ युवक-युवतियाँ उसी करम वृक्ष की तीन डालियाँ काट कर लाए। उसे राजा के महल आँगन में गाड़कर पूजा-पाठ किया गया, खुशियाँ मनाई गई। राजा के आदेश के अनुसार ही भादो एकादशी को प्रत्येक वर्ष करम पूजा, अन्य सभी उराँव बहुल क्षेत्रों में मनाया जाने लगा। और आगे सभी अमन चैन से रहने लगे। पूर्व की तरह स्थिति धीरे-धीरे सामान्य हो गई। पूरा उराँव प्रदेश के राज्यों में एक साथ करम पर्व मनाने लगे। इसी को "राजी करम" कहते हैं। (पहिले लेखे सौंसे कुँड्डुख़ राजी थीरआरा सलसंत मंज्जा, मुंधता बेसे राजी किर्रया अरा राजी बहुरारा। अवंगेम ई उल्लता करमन राजी करम बाचर)

इधर करम पूजा करते हुए वर्षो बीत गए। करमा और धरमा दोनों भाई व्यापार में काफी उन्नति कर लिए थे। यथाशक्ति मेहनत कर उन्होंने आवश्यकतानुसार धन दौलत अर्जित कर ली थी। अब उन्हें स्वदेश वापस का निर्णय लिया। रास्ते लम्बी और दुर्गम थी, कई स्थानों पर पड़ाव डाल कर यात्रा करनी पड़ी थी।

करमा ईष्यालु प्रवृति, धन लोलुप व्यक्ति था, एवं छोटा भाई धरमा कर्मयोगी, धार्मिक प्रवृति वाला कर्मठ, निश्छल निष्ठावान तथा कर्त्तव्य परायणता का प्रतीक था। कई दिनों की लम्बी दूरी तय करने के बाद दोनों बन्धु अपने मूल कस्बे के करीब आ पंहुचे। थकान थी, जिसके कारण मौजा के बाहरी सरहद पर उन्होंने अपना अन्तिम पड़ाव डाला। उनकी धर्म पत्नियाँ बच्चे तथा गाँव के सभी स्वजन घोर प्रतिक्षा कर रहे थे, किन्तु वे करम पूजा के शुभ दिन अर्थात् शुक्ल पक्ष भाद्र पद एकादशी तक घर वापस नहीं लौट पाये थे। यही शुक्ल पक्ष भादो एकादशी का दिन था। गाँव घर के सभी लोग कस्बे के मध्य स्थित ग्रामीण अखड़ा में करम वृक्ष की तीन

शुद्ध एवं सुकोमल डालियाँ स्थापित कर पूरे श्रद्धाभाव से उनकी उपासना में अपनी मौलिक रीति से तल्लीन थे, इस शुभ अवसर पर सम्पूर्ण ग्रामीण माहौल ही हर्षित हो उठा था। मांदर की चाट और झाल-मंजीरी की झंकार से सारा वातावरण ही गूंज रहा था। ऐसे उल्लास पूर्ण आनन्दमय वातावरण के बीच भला कौन किसकी परवाह करता। अपने पड़ाव स्थल से वे दोनों बन्धु कई राहगीरों के माध्यम से अपने स्वागतार्थ स्वजनों को संवाद भेज रहे थे।

करमा अपने भाई के साथ गाँव पहुंचने की खबर सबसे पहले अपने चौथे भाई रिझवा को (घर) भेजा। रिझवा गाँव-घर जाकर देखता है कि सारा गाँव तथा घर-परिवार करम देवता की पूजा में तल्लीन हैं। रिझवा भी माँ तथा भाई-बन्धुओं से भेंट कर करम देवता की पूजा में श्रद्धा भक्ति के साथ लग गया। रिझवा का नाम जैसा, वैसा रिझवार तथा रसिक भी था। वह भी रीझ-रंग में लग गया और व्यापार से लौटे भाईयों की खबार देना भूल गया। इसके आने के इन्तजार में घंटों बीत गए। करमा मन ही मन कूढ़ने लगा। अब इसकी खोज खबर करने के लिए धनवा को भेजा गया। धनवा की भी वही बात हुई इसके आने में भी बहुत देर हो गई थी।

किन्तु किसी ने भी जाने व अनजाने परवाह नहीं की। अतः खिन्न होकर करमा ने इस काम का दायित्व अनुज धरमा को दिया, किन्तु अन्य जनों की भांति गाँव घर जाकर करममय वातावरण में वह भी स्वयं ही खो गया। फलतः अनचाहे ही स्वतः भाई करमा की उपेक्षा हो गई, जिसे उसने आम सम्मान के खिलाफ बहुत ही गंभीरता से ली। उस समय उसके क्रोध और आक्रोश की सीमा न थी। काफी रात भी हो चुकी थी। क्रोधित करमा गाँव के बाहर स्वयं आग बबूला हुआ जा रहा था। चूंकि स्वजनों की इस उदासीनता को उसने उनकी घृष्ठता समझी, अपना अपमान समझा।

अन्ततः खिन्न होकर करमा खुद ही घर आ धमका तो उसने देखा क्या कि सभी लोग अपने घर द्वार छोड़कर अखाड़े पर करम पूजा मे अन्तर्लीन है। आनन्द विभोर होकर सभी आराध्य करमदेव की आराधना में लगे हैं। विविध हृदय-मोहक वाद्य तरंगों में सामूहिक नृत्य गान एकादशी की शान्त रात्रि के सन्नाटे को चीरते हुए आकाश में गूंज रहे थे। करम देव के सम्मान का यह दृश्य देखते बनता था, उल्लेखनीय है कि खेती पर आश्रितों के लिए भादो का महीना सर्वाधिक अभाव एवं आर्थिक संकट का समय होता है, फिर भी करमदेव की आराधना में अपने मुखमंडल पर स्वाभाविक खुशी और आनन्द की आभा लिए सभी बच्चे बूढे, नर नारियाँ डूबे थे

। इसी बीच दुष्टता से प्रेरित करमा अपने विवेक पर नियंत्रण न पा सका और खिन्न होकर वह अखाड़े पर पूजनार्थ करम-देवता (करम डाली) को उसने भरी भीड़ में अपमानित किया। उसने उसे निर्ममता पूर्वक उखाड़ फेंका जिसे लोगों ने करम राजा, करम गोसांई कह कर अपने हृदय में बैठाया था। इतना ही नहीं बल्कि उसने भरी भीड़ मे अपनी पत्नी को भी प्रताड़ित किया। चूँकि वह भी औरों की भाँति ही उस उल्लासपूर्ण पवित्र आयोजन में सम्मिलित थीं। इतना कुछ होने की देर थी कि करमा के जीवन में दुष्परिणाम और दुर्दिनों की झड़ी लग गई। जीवन के पग-पग पर दुर्घटनाएँ घटित होने लगी। धन-दौलत, लोग-लक्ष्मी, सुख-सुविधाओं में तेजी से ह्रास होने लग गया। दूसरी ओर कर्म और धर्म साधक धरमा की उन्नति दिन दूनी रात चौगुनी होने लगी। इससे करमा के हृदय मे द्वेष-ईर्ष्या की आग और भी अधिक धधकना स्वाभाविक था। करमा के घर परिवार की परिस्थिति दिनों-दिन बदत्तर होती जा रही थी। यहाँ तक कि दो जून का भोजन जुटाना उसके लिए कठिन हो गया। दोनों दम्पति को दूसरों के खेत में मजदूरी करने की नौबत आ गई। बच्चे बिलखने लग गये थे। पारिवारिक असन्तोष अपने चरम पर था, ऐसी विकट परिस्थिति के बीच करमा के दिन कट रहे थे।

एक दिन धरमा की धान रोपाई होने वाली थी। उसने धान रोपनी के लिए सारे गाँव से मदद माँगी। सामान्य जनों की तरह सभी भाईयों को भी आग्रह किया। गाँव के सभी लोग धरमा के रोपनी करने गये। साथ में करमा एवं उसकी पत्नी भी खेत में रोपनी करने सरीक हो गई। धरमा, उराँव परम्परानुसार धान रोपनी के सुअवसर पर सभी को प्रीति भोज के लिए आमंत्रित किया। किन्तु करमा एवं उसकी पत्नी को नहीं बुलाया। रोपाई के बाद सभी लोगों को मजदूरी दिया गया परन्तु, करमा एवं उसकी पत्नी को नही दिया, चूकि वे घर के ही व्यक्ति थे। करमा को भोज पर विशेष आमंत्रित नहीं किया।

"इरबारिम केरर, दरा आस बिड़ा छिटदस आद इदई। पुत बीरी धरमस ओरमारिन पचैत ओनागे एड्डस, पहें इरिन मला एड्डस, एड़आ बरओर बअनर की पाब एरनर। पहें ने हों एड़आगे मला बरचर। खने करमस कदरास दरा तंग पच्चोन आनियसः अनय पच्चो, गुचय नीन एका-एका उजगो इद्दकी अबड़न-अबड़न चड़ओत। ओर्मर गे चिच्चर, पहें नमन एन्देरगे मला एड्डर।

संयोग वश उस दिन करमा के घर में एक भी अनाज नहीं थे। चूल्हा जल

पाना मुश्किल था। बडे भाई करमा ने इस घटना को अपने परिवार के साथ अपमानजनक व्यवहार समझा। उसी रात को करमा ने अपने छोटे भाई धरमा के खेत में लगे धान पौधों को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया। पति-पत्नी रात को मौका पाते ही लगे धान को उखाड़ फेंकने लगे। परन्तु इसी बीच देवी शक्ति अवतार लेती है। जितने बड़े भाग के धान उखाड़ कर फेंके थे, उस जगह पर पुनः धान के पौधे यथावत है। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो किन्ही दो स्त्री-पुरूष को पुनः रोपते हुए देखा। वह अचभ्भित होकर घबड़ाया। करमदेव की कृपा से धरमा का कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। कुछ दिन बाद करमा की पत्नी गंभीर रूप से बीमार पड़ी। अब करमा का घर परिवार उजड़ने की स्थिति में आ गया था। इसी बीच उसे स्वप्न मे दैवी ध्वनि मिली तुम महापापी हो, तुमने करम देव का अपमान किया है। इसलिए तुम्हारी ऐसी दुर्गति हुई है। तुमने करम डाली उखाड़ फेंका है और खेत में लगे धान को भी उखाड़ फेंका। जब तक तुम करम देव (करम राजा) के समक्ष अपनी गलती स्वीकार नहीं करोगे पूजा पाठ नहीं करोगे तुम्हें विधि पूर्वक भादो एकादशी के दिन करम डाली लाकर विधि पूर्वक पूजा-पाठ करोगे तब अच्छे दिन फिरेंगे।

अपने बिगड़ें भाग्य का मारा परिस्थितियों से वह जर्जर हो चूका था। ज्ञान का कापाट खुला। स्वयं अपनी पिछली भूल को स्वीकारा। दिव्य- ध्वनि से प्राप्त निदेशानुसार उसे मोक्ष का मार्ग मिला। वह सत्मार्ग था, अगले शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन करम-राजा का पुनर्स्थापन और विधि पूर्वक पूजन कष्टों और परेशानियों का भुक्तभोगी करमा ने देवी निर्देशों का सहज भाव से अनुपालन करता हुआ मन में शुद्ध भाव समेटे हुए आत्म विश्वास के साथ श्रद्धा पूर्वक करम देवता की खोज में निकल पड़ा मार्ग में उसे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा, परीक्षा की विभिन्न कठिन घड़ियों से गुजरना पड़ा।

मार्ग में सर्वप्रथम उसे एक तालाब मिला उसे (स्वाभाविक) प्यास लगी थी। उसने पीने के लिए ज्यों ही अपनी अंजली में जल उठाया तो देखा कि पानी में कीड़े है। पानी पीने योग्य न था, निराश होकर ज्यों ही वह आगे बढ़ने लगा उस तालाब के मालिक ने करमा से प्रश्न किया-भाई तुम कौन हो? कहाँ जा रहे हो? करमा ने सारा वृतान्त बतलाया। इसपर तालाब के मालिक ने भी पानी में वर्षो से कीड़े होने का कारण करम देवता से पूछकर आने का आग्रह किया। करमा स्वीकारात्मक जवाब देता हुआ आगे बढ़ा।

आगे जाने पर करमा को भूख लगी। रास्ते में उसे एक खूबसूरत गूलर (डूम्बर) का वृक्ष मिला जो सुन्दर फलों से लदा था। करमा ने फल खाना चाहा। दुर्भाग्य से कोई फल खाने योग्य नहीं था। जिसे वह खाना चाहे, वही कीडों से भरा था। भूखा करमा चाहकर भी नहीं खा सका। अपने कर्म तथा भाग्य को कोसता हुआ वह आगे बढ़ने लगा। बाग के रखवाले ने करमा का वृतान्त सुनने के बाद उससे प्रश्न किया और करम राजा से मुक्ति का मार्ग सुन आने का आग्रह किया। आगे बढ़ने पर एक गाय मिली। वह भी घोर कष्टों और विपत्तियों से गुजर रही थी। वह अपनी स्तन.पीड़ा से पेरशान थी, चूँकि बच्चे से माँ बिछुड़ गई थी। बछड़े को दूध नहीं पीला पा रही थी। वात्सल्य भाव लूट चुका था, भूखा करमा ने दूध पीना चाहा किन्तु गाय के स्तर से दूध के बजाय खून आ रहा था। उसे यहाँ पुनः गहरा आघात लगा। गाय के मालिक ने भी इस दुःख का कारण निदान का प्रश्न करमा को दिए।

कुछ दूर आगे जाने पर करमा की भूख और अधिक तीव्र होती गई। विवश होकर वह चूड़ा कूटने की आवाज सुन कर चूड़ा कूटने वाली एक महिला के घर पहुँचा। उसने चूड़ा माँगा किन्तु चूड़ा बनता नहीं था, जिससे वह महिला भी परेशान थी। तीर्थयात्री करमा से उसने इस विपत्ति का कारण करम देवता से पूछ आने का आग्रह किया। आगे बढ़ने पर करमा को एक मगरमच्छ मिला जो एक जलचर जीव, तप्त रेत में तड़प रहा था। उसने भी करमा से उसकी पद यात्रा का प्रयोजन जानना चाहा एवं प्रायोजन जानने के बाद अपने कष्टों के कारण का प्रश्न रखा और उनके निदान का दायित्व सौंपा।

करम देवता की खोज में निकले करमा को बहुत दिन हो चुके थे। वह लम्बा तथा दुर्गम मार्ग तय कर चुका था। अन्ततः उसे एक महान बाधक के रूप में विशाल जल पिण्ड (सागर) दिखाई दिया, जिसे सुदूर पार करम राजा अपने प्राकृतिक सौन्दर्यो के बीच, भादो महीने में सोलहों कलाओं से परिपूर्ण मन्द समुद्री समीर के झोकों से मदमस्त झूम रहे थे। कठिन परीक्षा की घड़ियों से जूझता हुआ करमा, करम राजा को देख बड़ा प्रसन्न हुआ। मन में मोक्ष प्राप्ति की आशाएँ जगी किन्तु विशाल जल पिण्ड पार असंभव था। यही उसके लिए अन्तिम परीक्षा थी। मगर ने उसकी मद्द की चूँकि दोनों के लिए कष्ट के प्रश्न समान थे। मगरमच्छ ने करमा को पीठ पर बिठा कर सागर पार कराया। उसने इस जोखिमों के समक्ष अपना आत्मविश्वास खोया नहीं। वह अदम्य-साहस एवं अन्तिम शाक्ति का प्रयोग कर घुटने के बल रेंगता

हुआ करम राजा के समीप पहुचा।

अब करमा के मन में पूर्ण विश्वास जगा। मोक्ष प्राप्ति का विश्वास हुआ। वह अपनी थकान और सारे कष्टों को भूल गया। चुँकि वांक्षित फल प्राप्ति की आशा बंध चुकी थी। मन में दिव्य ज्योति प्रज्वलित हुई। उसने शुद्ध भाव से श्रद्धापूर्वक करम देवता को वस्त्र के रूप में कोरा शुद्ध अरवा धागा, अक्षत, पुष्प स्वरूप तेल सिन्दूर आदि आवश्यक पूजन सामग्रियों को अर्पित की। वह करम की तीन शुद्ध-सुकोमल डालियाँ काट उतारी और कन्धे पर उन्हें धारण कर लिया।

कथाकार के निर्देशानुसार-महादेव स्वरूप करम व्रत किये नवयुवक-नवयुवती पूजनार्थ स्थापित करम देव पर फूल, अक्षत आदि की वर्षा करते हैं (और कहते है-बरिसो-बरिसो) और करम को स्पर्श कर समूहिक मंत्रोचारण करते हैं।

इसके बाद करमा क्षीण हालत में भी अपनी खोयी ताकत बटोर कर करम राजा की टहनियों को सम्मान पूर्वक अपने कंधों पर लाद कर प्रसन्नचित होकर वहाँ से सुगमता पूर्वक वापस लौटने लगा। अब वापसी में कष्ट भोगी मगरमच्छ, चुड़ा कूटने वाली औरत, गाय, बाग के पेड़ तालाब आदि क्रमशः बारी.बारी से पुनः मिलते गए।

गाय के कष्टों का कारण था कि कभी करम देव के पूजनार्थ उसके मालिक ने दूध नहीं दिया था। और प्रथम बियान के बाद प्राप्त दूध का प्रसाद लोगों के बीच नहीं बाँटा था। मालिक ने भी तदनुसार प्रायश्चित किया।

क्रमशः गूलर (डूम्बर) पेड़ मिला, जिसके फलों में कीड़े भरने का कारण था कि भूखे राहगीरों को मालिक कभी फल खाने नहीं दिया था। और करम देव पर प्रसाद स्वरूप आर्पित करने के लिए मांगने पर गाँव के महतो-पहानों को दुतकारा था। माली ने करम देव के समक्ष प्रायश्चित किया।

अन्ततः तालाब मिला, जिसका पानी पीने योग्य नहीं था। पानी में सालोभर कीड़े होने का कारण था कि तालाब बनने के बाद उसका विधि पूर्वक पूजन नहीं हुआ था, और मालिक उसका उपयोग करने लग गया था। साथ ही करम देवता के पूजनार्थ स्नान करने गए व्रतधारी युवक-युवतियों को उसके मालिक ने कभी फटकारा था। अतएंव तालाब के मालिक ने भी करम राजा के सम्मान में पूजनार्थ सभी लोग उसके गाँव शुक्ल पक्ष भादो एकादशी के दिन वापस आ पहुचे। विधिपूर्वक अखाड़े पर उनका स्थापना हुआ। गाँव के सभी नर.नारी, बच्चे-बूढ़े यथासाध्य

करमदेव की पूजा आराधना में शुद्ध मन एवं स्वच्छ नये वस्त्रादि धारण कर वांछित फलों की प्रप्ति की कामना करते हुए समर्पित हो गए।

बरिसो.बरिसो, कहानी समाप्त होने के बाद अछत् चावल फूल आदि करम देव पर छींटते या अर्पित करते है। अंत में आनन्दित होकर सभी लोग अखाड़े में खुशी से झुम उठते हैं।

करम की तैयारी

करम पर्व की तैयारी एक महीने पूर्व से ही आरंभ हो जाती है। युवक अपने नये मांदर की चिन्ता में रहते, कुछ युवक अपने पुराने मांदर की मरम्मत करवाते है। नगाड़ा, घंट, थेचका, घुघुरू, बंसुरी आदि बाजों के सामान जुटाने में मस्त हो जाते है। लड़कियाँ भी अपने श्रृगांर के सामान जुटाने में व्यस्त रहती है। युवक-युवतियाँ सभी अपने माता पिता को आर्थिक रूप से तंग करने लगते है। दो तीन सप्ताह से ही वे बाजार जाने लगते हैं। प्रति सप्ताह कुछ न कुछ सामान लेकर अवश्य आते हैं। विशेष कर युवतियाँ करमा पर्व की इंतजार बडी उत्सुकता से करती है। इन दिनों में खेतों के आड़ पर काँसी फूल बगुले पँख की तरह धरती का श्रृगांर किये रहती है। इन फुलों को युवतियाँ खोपा में लगाती और मन ही मन मुस्कुराती है। इस सुहावने मौसम में युवा प्रेमी अपने प्रेमिकाओं के लिए बकिला (बगुला) टैंइयाँ का इन्तजाम करते हैं, युवक अपने छाता में बकिला टैंइयाँ लगाकर अपनी युवती साथी को मोहित करते हैं। युवतियाँ भी बगुले टैंइयाँ से सुशोभित होती हैं। और तरह-तरह के फूल माला बनाती हैं। करम पर्व की तैयारी में भाई-बहन बाजार जाने को बहुत उत्सुक रहते हैं। जिसकी पुष्टि गीतों से मिलती है। गीत-

तोंय तो ददा मांदर किनाले,
हम दादा बेरा, पिंधे जाबु रे - 2
तोहार मांदर फुटी गेला दादा,
हामर बेरा राहियो गेला - 2 '

बाजार हाट में ही संगे-संबंधी, इष्ट.मित्र जनों को करम पर्व की सूचना देते एवं निमंत्रण भेजते है। उराँव लोग अपनी भाषा में कहते हैं- "करम बेचागे बरके सइहा, करम बेचागे यारा।" बुर्जुग लोगों को "झरा ओना बरके अयंग, बंग फलना औला करम तली।" करम पूजा के अवसर पर अधिकतर युवतियाँ उपवास व्रत

रखती, जिन परिवारों में युवतियाँ नहीं होती उस परिवार के युवक भी व्रत रखते हैं। पूजा के समानों में सुन्दर साफ खीरा, चूड़ा, सिन्दूर, हल्दी, रंग कपड़ा, अरवा चावल, सफेद धागा अर्पण, जावा फूल के बीज और एक नया डौड़ा (डलिया) खरीद कर लाते हैं। माता.पिता इस अवसर पर सभी सदस्यों के लिए नये कपड़ों की व्यवस्था करते हैं।

जावा फूल

भादो महीने की तृतीया को ही कुँवारी लड़कियाँ नदी अथवा किसी पवित्र स्थान से बालू लेकर जावा उठाती हैं। तीज के दिन विशेषकर स्त्रियाँ उपवास व्रत रखती हैं, और मकई, जौ, गेहूं, चना आदि के बीजों को बर्त्तन या नये टोकरी पर बालू में अंकुरण के लिए रखती हैं। स्त्रियाँ प्रतिदिन उसे श्रद्धा भाव से हल्दी पानी छिड़कर उसकी सेवा करती हैं। कोंहड़ा, कुच्चू एवं केले के पत्तों से ढक कर एक सप्ताह तक रखा जाता है। बालू में लगे बीज करम पर्व के दिन बसन्त की बहार के लिए नये पीले पल्लवों का मनोहर रूप लिए प्रस्फुटित हो जाते हैं। युवतियाँ इतना श्रद्धा भाव से सेवा करती हैं कि केवल एक सप्ताह में ही अंकुरित होकर एक साथ उत्पन्न, हजारों नन्हें-नन्हें, इसे ही जावा फूल कहते हैं। बच्चे, बूढ़े, युवक इसे कान पर लगाते हैं और स्त्रियां, युवतियां अपने खोपा एवं बालों में खोंसकर श्रृंगार करती हैं। घर में आये सभी सगे-संबंधी एवं इष्ट जनों को जावा फूल बाँटा जाता है। जावा फूल के बिना करम पर्व ही अधूरा लगता है। कहते हैं कि इस गाँव में जावा फूल नहीं मिला तो भोजन पानी कैसे मिलेगा? इस पर एक गीत भी है :-

चट्टी पहटा पेलय यो, जावा पूंपन माला चिःअनर रे - 2
जावा पूंपन माना चिअनर तो, मण्डी अम्मन एकासे चिओरे? '

यदि किसी घर में जावा फूल अच्छी तरह से नहीं उग पाया या नहीं बढ़ सका तो युवतियाँ दुःखी होती हैं। इस अवसर पर गीत गाती हैं:-

तोके रे जावा सेवा मोंय करालो,
जावा बड़ि दागा देला रे - 2
करमा का दिने जावा मोंय जवालो,
जावा बड़ि दागा देला रे - 2 '

अर्थात् इतने तन.मन से मैं जावा उठायी, प्रतिदिन श्रद्धा भाव से हल्दी पानी देकर सेवा की फिर भी मुझे जावा क्यों धोखा दी? जब सोलहों श्रृंगार लिए बढ़

कर तैयार रहती है, तो युवतियाँ बहुत खुश रहती हैं। जावा को अपने युवक प्रेमियों के लिए संजोकर रखती हैं। इसे बहुत ही प्रेम भाव से अपने-अपने प्रेमी युवकों को देती हैं। जावा फूल प्राप्त होने पर युवक बहुत हर्ष का अनुभव करते हैं। जावा फूल की तुलना सुन्दर युवती से भी करते हैं और गीतों के लय से कहते हैं कि प्रेम रूपी जावा फूल को हम हड़का (हृदय रूपी बक्सा) में रखेंगे।

गीत - पेलो चिच्चका जावा पूंपन हड़ेका नू जोगाब'ओन रे - 2
हाड़ेका तिसग'ओन जावा पूंपन एरोन,
पेलो ईरका बेसे लगो रे,
पेलो ईरका बेसे लग्गो। '

जावा के लिए मकई के बीजों को ही सबसे अधिक उपयुक्त समझते हैं। कहा जाता है कि उराँव जाति के पूर्वज जिस गुफे में छिपे थे वहाँ पर मकई के बीज गिरे थे, जो उग आये। वे सूरज की रोशनी के अभाव में पीले रंग के पड़ गये हैं। हर पौधे में सिर्फ दो ही पत्तियाँ फूल जैसा निखर गयी। इसी फूल को उराँव लोग जावा फूल कहते हैं। एक समान हर पौधे में दो सुन्दर खूबसूरत पत्तियाँ निकलती हैं जिसकी तुलना जुड़वा बच्चे बच्चियों से की जाती है। उराँव लोग गंगा और जमुना नदी को दो जुड़वा बहन की तरह एक साथ बहते देखा था। वे गंगा-जमुना के तट पर वर्षों जीवन.यापन किए थे। यही वजह है कि उराँव में नये जुड़वा बच्चे होने पर गांगी-जौनी या गंगी-जमनी नाम दिये जाते हैं। करम देव की पूजा के बाद जावा फूल को करम राजा का आशीष एवं बरकत के लिए एक दूसरे को बांटते हैं।

पूजन विधि

करम के दिन संध्या होते ही युवक-युवतियाँ एक स्थान पर जमा होती हैं। करम डाली लाने के नाम पर नैगस, पूजार के निए एक हंड़िया देते हैं। तदोपरान्त सभी युवक-युवतियाँ करम डाली लाने के लिए एक साथ प्रस्थान करती हैं। व्रतधारी युवतियाँ फूल तोड़ने के लिए नया डौड़ा (टोकरी) लेते जाती हैं। मान्दर-नगाड़े के ताल में गीत-नृत्य करते हुए करम वृक्ष के पास पहुँचते हैं। पहान, पुजार या नैगस करम वृक्ष के पास पहुँचने के बाद पहान अरवा धागा (सफेद स्वच्छ धागा) से करम वृक्ष को तीन बार लपेटता है। धागा लपेटना, करम वृक्ष को नया कपड़ा पहनाने का प्रतीक है। तत्पश्चात तीन टीपा सिन्दूर दान (तीन बार) करता है और अरवा चावल

से वृक्ष को अभिषिक्त करते हुए करम वृक्ष की पूंजा करता है। इसके बाद नैगस तीन सुकोमल शुद्ध डाली कटता है। इस अवसर के गीतः-

के काटे, के काटे नावा करम डाइर रे,
ननका राया काटे करम डारी रे
फलना राया काटे करम डारी। '

प्रत्येक डाली को एक ही बार में काटना पड़ता है। प्रत्येक डाली को जमीन पर गिरने नहीं दिया जाता है, हाथ से ही रोक कर पकड़ते हैं हैं। तीन लड़कों को एक-एक डाली पकड़ाया जाता है, जिसे बाद में तीन युवतियों को सौंपा जाता है। सभी गाते-बजाते गाँव कस्बे की ओर लौट पड़ते हैं। रास्ते में ही सुरगुजा, कुरथी, उड़द आदि के लत्तरों-फूलों आदि को फूल स्वरूप तोड़कर डौड़ा (टोकरी) में लेते आते हैं। करम राजा के स्वागतार्थ गाँव के लोग पहले से ही राह देखते हैं। मांदर-नगाड़े के ताल में अखाड़ा तक पहुँचाया जाता है। अखाड़े में कुछ देर खेलने के पश्चात् करम राजा को पहान, नैगस के यहां सौंप दिया जाता है। इसके बाद अपने. अपने घर भोजन के लिए चले जाते हैं। नया विवाह होने वाली लड़कियों के घर किसी दूसरे गाँव से करम डौड़ा एवं कपड़े लाये जाते हैं। गाँव की युवक-युवतियाँ उस नये करम डौड़ा और कपड़े मांगने हेतु एक दूसरे आंगन में खेलने जाते हैं। किसी-किसी गाँव में करम डाली लाते ही अखाड़ा में गाड़ दिया जाता है परन्तु अधिकांश गाँवों में आधी रात में नैगस करम राजा को विधिपूर्वक गाड़ देता है। रात भर अखाड़ा में नाचते-गाते हुए पूरा गाँव आनंद विभोर हो उठता है। विभिन्न हृदय- विदारक वाद्य तंरगों तथा सामूहिक नृत्य गानों के स्वर शान्त रात्रि के सन्नाटे को चीरते हुए आकाश में गूंजने लगते हैं। बच्चे-बूढ़े, नर-नारियां आनन्दमय वातावरण में खो जाते हैं। एक दूसरे गाँव से पड़हा खेलने आये हुए सभी इष्टजन इस आनन्दमय वातावरण में शरीक हो जाते हैं। कहानी आरम्भ होने से पहले सबों को आवाज देकर बुलाया जाता है। सभी इष्टजन अखाड़े पर जमा होते हैं। परम्परा-अनुसार गाँव के किसी खास व्यक्ति को कहानी बतलाने एवं प्रवचन देने का दायित्व सौंपा जाता है। उस व्यक्ति को सम्मानपूर्वक बैठने के लिए मंचिया देते या चटाई बिछाया जाता है और एक व्यक्ति पास में ही छाता पकड़ कर खड़ा रहता है। व्रत किये हुए युवक.युवतियों को कंधा पर उठा कर अखाड़ा लाते हैं। व्रतधारियों के लिए डौड़ा में पूजा के सामान

जैसेः- खीरा, चूड़ा, दीपक, अरवा चावल, सिन्दूर, रोटी, मिठाई आदि लेकर आते हैं। व्रतधारी करम राजा का तीन बार परिक्रमा करते हैं और अपना स्थान लेकर करम राजा के निकट बैठ जाते हैं। जब व्रतधारी करम राजा की परिक्रमा करते हैं उस वक्त व्रतधारी की माँ या बहन, भाभी कोई भी सहयोगी करम राजा के चारो ओर फाल से खोदती और वहां पर लोटे से पानी गिराती हैं कहा जाता है कि जब उराँव लोग करम वृक्ष के निचे छिपने के पूर्व घोड़सहिस लोग घोड़े को तीन बार करम वृक्ष की परिक्रमा कराये, उसके बाद रानियों को वृक्ष के नीचे छिपने भेजा। लोटे से पानी गिराना घोड़े द्वारा पेशाब करना और दुश्मनों के लिए रेखा खींचना समझा गया है। खीरा एक नवजात शिशु (बच्चा) का प्रतीक है एवं मानव सृष्टि तथा वंश वृद्धि को अक्षुण्ण रखने के लिए उपयोग होता है। फूल एवं अक्षत चावल बांटे जाते हैं। बुजुर्ग व्यक्ति कहानी जारी रखता है, कहानी के मध्य में व्रतधारी युवतियों को पार्वती के नाम से पुकारा जाता है। पूछा जाता है, कि का पाला रे पार्वती मने? उत्तर मिलता है, कोंहड़ा लेखे बेटा, खीरा जैसन बेटा।

युवतियाँ करम राजा से एक अच्छे पति की प्राप्ति के लिए वरदान मांगती है। एक सफल गृहणी एवं अच्छी माता बनने की कामना करती हैं। सामाजिक जीवन शादी-ब्याह करना, पति-पत्नी होना एवं सृष्टि को आगे बढ़ाने की चेष्टा करना प्राणी मात्र का कर्म एवं धर्म है। यही सुख है, यही शांति है, यही जीवन है। इसी खुशहाल जीवन की प्राप्ति हेतु पूजा भक्ति करना इस पर्व का उद्देश्य है।

व्रतधारी युवतियाँ दो तीन बार फूल बाँटती नैगस निर्देशानुसार फूलों की वर्षा करते हैं। करमा.धरमा की कहानी कहते हुए करम कथा (प्रवचन) समाप्त होता है। कहानी समाप्त होते ही खेलने के लिए जुट जाते हैं।

विसर्जन

करम राजा का विर्षजन से पूर्व नैगस, (पाहन) पूजरस (पाहन के सहयोगी), महतो (प्रशासक) गाँव के प्रमुख व्यक्तियों के घर आँगन घुमाया जाता है। सभी के घर-आँगन में करम राजा का अन्तिम बार स्वागत किया जाता है। सभी घरों में करम डाली को शुद्ध जल से धोया जाता है, साथ ही तेल-सिन्दूर, अच्छत दान चावल देते हैं। इस क्रम में करम डाली धारक युवतियों को भी पैर धोकर स्वागत करते हैं। आंगन में कुछ देर खेलने के बाद घर की नारियाँ खाने के लिए रोटी,

मिठाई एवं हंड़िया तथा अन्य पेय पदार्थ देते हैं इसी प्रकार गाँव के सभी घर में क्रमशः परम्परा के अनुसार करम राजा को घुमाया जाता है। सभी घर से कुछ न कुछ खाने को दिया जाता है। इस अवसर के गीत :-

ई करम तो का मांगेला, - 2
कोना में बुचली हांड़ी,
डौड़ा में रोटी आहे,
सेके जनू मांगेला।
नैगनी, नैगनी, बरय नैगनी - 2
करम राजा काली गंगा नहान - 2 '

इन गीतों से युवक-युवतियों का हृदय दुःखी होता है और आँखों में आँसू भर आते हैं। बाद में किसी नदी अथवा जलाशय में करम देव को सम्मान पूर्वक प्रणाम कर, बहा दिया जाता है। करम घूमाने के समय जो कुछ रोटी, मिठाई, हंड़िया मिला रहता है उसे जलाशय के पास ही सभी युवक-युवतियाँ मिल कर खाते हैं और नृत्य-गीत करते हुए गाँव वापस लौट आते हैं। तीसरे दिन प्रसाद के रूप में खीरा अथवा चूड़ा को गाँव के सभी घरों में बांटते हैं। व्रतधारियों का खीरा प्रसाद फल (पुत्र की कामना का) जिनके साथ बेटा.बेटी का रिश्ता होगा, नहीं दिया जाता है। अन्य रिश्तों जैसेः-नाना-नानी, दादा-दादी लगने वालों को ही दिया जाता है।

उराँव बहुल क्षेत्रों में करम पूजा विभिन्न तिथियों में की जाती है, जिसे करम पूजा, करम कथा, करम गीतों के ताल एवं लयों में विविध रूपों में देखे जाते हैं, जैसे. राजी करम, इंद करम, जितिया करम, दशई करम, सोहराई या कार्तिक करम कहा जाता है। इस महत्वपूर्ण एवं सार्वजनिक पर्व की तिथियों एवं शुभ अवसरों में, स्थान विशेष पर भिन्नता दृष्टिगोचर होता है, इसका मुख्य कारण सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और भौगोलिक कारण रहे होंगे। करम पूजा की तिथियों में जो भिन्नता है, उसे थोथी बकवास नहीं कहा जा सकता है, बल्कि कमोवेश कुछ न कुछ निश्चित रूप से सार्थकता थी। यही वजह है कि अलग-अलग क्षेत्रों, पड़हों, गाँवों, टोलों में विभिन्न तिथियों एवं अलग-अलग दिनों में मनाते हैं। पूर्व काल में इस त्योहार को एक ही दिन मनाते थे। पूजन तिथि और कथा में एकरूपता थी। परन्तु प्राकृतिक विपदाओं के शिकार होने, रोग, महामारी, अकाल पड़ने से इन

आदिम-जन-जातियों का नियमित जीवन बाधित हुआ है। जिनके कारण पारम्परिक रीति.रिवाजों, पर्व-त्योहारों और अन्य धार्मिक अनुष्ठानों पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी वजह से स्थान विशेष पर समय और तिथियों में अन्तर पड़ गया, इनके कुछ मुख्य कारण हैं।

सामाजिक कारण

कोई भी सामूहिक पूजा-पाठ, धार्मिक अनुष्ठान या पर्व-त्योहार किसी एक व्यक्ति, परिवार या एक गाँव के लिए नहीं होता। छोटे से छोटे त्योहार को भी सार्वजनिक ही समझा जाता है। पूजा-पाठ, पर्व-त्योहार या कोई भी सामाजिक संस्कार हो उसके अनुरूप ही अतिथियों, दो-चार पंच, गाँव पड़हा आदि को आमंत्रित करते हैं। एक ही तिथि में करम पर्व का आयोजन होने पर इष्ट-कुटुम्बों, गाँव, पड़हा वालों से परस्पर मेल-मिलाप संभव नहीं होता है। एक दूसरे गाँव, पड़हा वालों से परस्पर मेल-मिलाप संभव नहीं होता है। एक दूसरे गाँव, पड़हा के साथ गीत नृत्य करने का अवसर नहीं मिलता है। जब कि विभिन्न तिथियों में करम पर्व मनाने से एक दूसरे परिवारों या एक दूसरे गाँव, पड़हा के साथ परस्पर मेल-मिलाप होता है। पर्व-त्योहारों के शुअवसरों पर अपने इष्ट-मित्रों, सगे-सम्बन्धियों को मेहमान बुलाते, परिवार या गाँव की शोभा बढ़ाने एवं आनन्द मनाने के लिए एक दूसरे गाँव, पड़हा को करम खेलने (नृत्य करने) बुलाते हैं।

मनौवैज्ञानिक कारण

पुर्वकाल में जब एक ही दिन राजी करम मनाते थे, इस सुअवसर पर कुछ गाँवों में कोई न कोई अप्रिय घटना घट गई थी। महामारी, आकाल, मृत्यु या मनुष्य के जीवनधार मवेशियों की मृत्यु जैसे घटनाएँ प्रमुख हैं, जिससे मनुष्य का नियमित जीवन बाधित हुआ। करम पूजा जैसे धार्मिक अनुष्ठान एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों पर जबरदस्त असर पड़ा। मनुष्य ने अपनी मानसिक संतुष्टि के एकमात्र धर्मेस (भगवान) का सहारा लिया। उन्होंने सोचा कि यह दिन उचित नहीं हैं, दूसरे दिन पर्व का आयोजन करना उत्तम होगा। फलतः ये मुख्य पर्व निर्धारित कार्यक्रम से भटक गये और आज विभिन्न तिथियों में अलग-अलग दिनों में मना रहे हैं।

आर्थिक दुर्दशा

करम पर्व ऐसे समय में होता है, जब अधिकांश लोगों के यहाँ खाद्य पदार्थों की कमी रहती है। उराँव कृषि पर आश्रित जाति हैं। इनका जीवन मुख्य रूप से खेती

एवं कृषि पर आधारित है। छः माह खाने के बाद बचे. खुचे बीज बोने, रोपनी करने, मजदूरी, मद्द या भूति देने में खर्च हो जाते हैं। खाने के एवज में बहुत कम अनाज घर में बच पाता है। कुछ ही परिवारों के पास अनाजों का भण्डार रहता है। अधिकांश लोग गोड़ा धान, गोन्दली, मडुवा और दलहन पकने का इन्तजार करते हैं जिससे आर्थिक दशा में सुधार हो। इस आर्थिक बदहाली में पर्व-त्योहार मनाना विकट समस्या बन जाती है। इसी कारण कुछ गाँव के लोग भादो एकादशी को करम पूजा (राजी करम) नहीं मानते, कुछ दिनों बाद करम पूजा की औपचारिकता पूरी करते हैं। कुछ अन्न घर में प्रवेश हो जाता है, तभी तिथि निश्चित करते, पर्व मनाते हैं। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर त्योहार मनाने में अधिक आनन्द आता है। एक दूसरे परिवार एवं इष्टजनों को बुलाने में समर्थ हो जाते हैं। दशई करम दशहरा के दिन या आस-पास एवं कार्तिक (सोहराई) करम इन्हीं आर्थिक करणों से ही कार्तिक माह में मनाते हैं।

भौगोलिक कारणों से भी अलग-अलग दिनों में करम मनाते हैं। ऊँचे-नीचे समतल भू-भागों या वन प्रदेशों पर जलवायु का प्रभाव मनुष्य के जीवन-यापन कृषि, उद्योगों के साथ-साथ पर्व-त्योहारों पर भी पड़ता है। अलग-अलग क्षेत्रों में फसलों के बोने और कटनी-मिसनी के समय-सीमा में काफी अन्तराल होता है, जिससे पर्व-त्योहारों के समय और दिनों में भिन्नता हो गई होगी। करम डाली की पूजा, करम कहानी, गीत-नृत्यों में एकरूपता है किन्तु विभिन्न तिथियों में एक ही रीति-रिवाज से मनाते हैं। इस तरह करम पर्व में भिन्नताओं में भी एकरूपता है।

राजी करम : देश के विभिन्न उराँव बहुल क्षेत्रों गाँवों, पड़हा में भादो एकादशी (भाद्र पद शुक्ल पक्ष) को जो करम पूजा मनाया जाता है, उसे "राजी करम" या राईज करम कहते हैं।

इंद करम : राजी करम के चार दिनों बाद से एक सप्ताह तक जो करम मनाये जाते हैं, उसे इंद करम कहते हैं। चूंकि राजी करम के चार दिन बाद से इंद पूजा जतरा आरम्भ होता है। किसी-किसी गाँव में इंद और करम एक ही दिन मनाते हैं।

जितिया करम : जो सामान्यतः राजी करम के बारह दिनों बाद मनाया जाता है। याद रहे कि जितिया करम उराँव रीति-रिवाज में नहीं है। यह व्यक्तिवादी परम्परा है। कुछ लोग व्यक्तिगत या परिवारिक रूप से जितिया (पीपल) की डाल को

आंगन में गाड़ते और पूजा करते हैं परन्तु कृष्ण-पक्ष के शुभ मुहूर्त पर इसी दिन सामूहिक रूप से गाँव के आखाड़ा में करम डाली गाड़ कर राजी करम की विधिपूर्वक पूजा करते हैं, तो यह करम पर्व उराँव परम्परा के तहत आता है।

दशई करम : दशहरा करम जो सामान्यतः विजय दशमी के दिन मनाते या विजय दशमी से एक सप्ताह बाद तक किसी शुभ दिन करम पूजा करते हैं, परन्तु उराँव जाति का करम पर्व और हिन्दुओं के दशहरा में कोई आपसी या धार्मिक सम्बन्ध नहीं है।

सोहराई करम या कार्तिक करम : यह करम सोहराई के पर्व या सोहराई के दिन ही मनाते हैं। सोहराई करम मनाने वाले गाँवों की संख्या नहीं के बराबर है। इस अवसर पर के करम पूजा में सोहराई या दीपावली से कोई धार्मिक सम्बन्ध नहीं हैं।

बुढ़ही करम या पच्चो : यह करम मुख्य"रूप से आषाढ़ महीना में मनाते हैं इस करम में विशेषकर बूढ़ा-बूढ़ी या वृद्धजन ही पूजा करते हैं। बूढ़ी करम को किसी खास सामाजिक घटना की यादगारी तथा रोग-पापों को भगाने के लिए आयोजित किया जाता है। राजी करम के साथ बूढ़ी करम का कोई धार्मिक सम्बन्ध नहीं है। दोनों ही करम की पूजा और ऐतिहासिक घटना एक दूसरे से भिन्न हैं। करम पर्व के बारे में इतना जिक्र करना पर्याप्त है।

करम डण्डी

1. राजी करम गे समा मनय अयो
   अचेरा खोसओन फुफुन्दी चुनओन;
   पईरी बीरि समा ननय अयो
   अचेरा खोसओन फुफुन्दी चुनओन।

2. एका पेल्लो जवा जमाबाचा
   हरदी पानी लगाबाचा हो;
   चेंडा पल्लो जवा जमाबाचा
   हरदी पानी लगाबाचा-2।

3. समधिस गे जड़ा बन्ना कुल्ला
समदो एंदेरगे चैंई;
समदो गे पार बन्ना किचरी
समदो एंदेरगे चीं-ख़ी।

4. बे-लर घी राजी केरा भईया
हाकिम घी राजी बरआ लगी हो
हाकिम घी राजी बरआ लगी;
चीक धोतिन अम्बा चिआ भईया
राजी रकम धोती ननाहो
देशे रकम धोती ननाहो।

5. ओरमर घी एड़पा
झैंझ मान्दर ख़रखी
एंग्है एड़पा सुना मंजा रे-2
बढ़ाला धिया मला बढ़ाल पुता मला
एंग्है एड़पा सुना मंजा।

6. ओर्मर गे करम डौड़ा
हय एंगदा करम डौड़ा गेम चीं-ख़ी हो
हय एंगदा करम डौड़ा गेम चीं-ख़ी;
और बरना पे-ट बरआ चीतो बिटीगो
करम डौड़ा ख़ें-दोन चिओन हो
करम डौड़ा ख़ें-दोन चिओन;
और बरना पे-ठ बरआ चीतो बिटीगो
साड़ी घंघरा ख़ें-दोन चिओन।

7. ओर्मर गे करम डौड़ा
एंग्गा गे बसुवा डौड़ा-2

नयो मल्ला बबा मल्ला
ने ख़ें-दो करम डौड़ा-2।

8. छोटे बारी निंगड़ी गा
बकूली टैंया गे चीं-ख़ी;
ख़ें-दा दरू चिआ ददा
बहिन गे ने दरू चिओ।

9. ओर्मर गे करम बरचा
एंगा गे बसुवा डबू हो;
नयो मल्ला बब्बा मल्ला
ने गुसन बड़ाई ननोन हो-2।

10. राजीनूं राजी करम मंजा
हय एंगदा डौड़ा गे चीं-ख़ी हो-2
और बेरैना पे-ठे बरआ चीतो बिटी
सड़ी मला घूघरेन ख़ें-दोन हो-2।

11. ओर्मयगे कोटाम डौड़ा
एंगागे बसुआ डौड़ा नयो;
नयो मला, बबा मला,
एंगागे बसुआ डौड़ा नयो।

12. ने बरई अयो ने बरई बबा,
बिटी दमाद बआ लगनर हो;
बान्डी ख़े-रन पिटोय बुची झरन तुन्दोय,
बिटी दमाद बरआ लगनर हो, बिटी दमाद।

13. कल जूड़ि कल कोय बड़ियम तैदन
करम गे बरके बःदन;
काला गा कालोन एकसन रओन
कोरोजो मूली नू रःके;
खंडियन अट्टोय बरेकन झपरोओय
गुंगुती ओहारी मनोय।

14. कल कोय कल मईं बड़ियम तैदन,
कल कोय कल मई बड़ियम तैदन
करम गे बरके बःदन
करम गे बरके बःदन;
कल कोय कल मईं बड़ियम तैदन
कल कोय कल मईं बड़ियम तैदन
जितया गे बरके बःदन
जितया गे बरके बःदन
बरआ गा बरओन ददा, नयो बबा केबोर
बरआ गा बरओन ददा, नयो बबा केबोर
ने निंगन धिरजा ननोर
ने निंगन धिरजा ननोर।

15. ने बरई अयो ने बरई बबा
बिटी दमाद बरआ लगी-2
बंडी खे-रन बिटोय
बुची झरन तुन्दोय
बिटी दमाद बरआ लगी।

16. बरय बुचु बे-चोत कोय,
अयो बबा ए-रागे बरओर;
बरय बुचु बे-चोत कोय,

पद्दा ख़ेप्पय ए-रागे बरओर;
बरय बहिन बे-चोत कोय,
गांवा भईयर ए-रागे बरओर।

17. किम किमाड़ो नाल किमाड़ो-2
जौँ-खय गे सिरोंग सोटोंग
पेल्लय गे नाल किमाड़ो-2।

18. पूँप तोक्खा किरकी कोय पेल्लो,
ककड़ो लातानूं हेल मेल मन्दी;
करम तरा केरकय को जों-ख़यो
लकड़ा लातानूं हेल मेल मन्दय।

19. नाईगनी गो नाईगनी बरय नाईगनी
नाईगनी के ले गेलक बांडा सियार-2
तोरो अंगनाए मोरो अंगनाए मुरगा
देतो नयो तीर धनू हो मुरगा मारेले-2
का करबे काटल दईया का करबे कूटल
संखा बिनु सभा बैसाए नेव करम डारी-2
गुन्डानुम गुन्डा लिन्डी दो
चुल्लोती सजदी, तांतरती उथुरदी,
बऊगी नू उईदी, नरम नरम मिक्खदी,
लड़म लुडुम मुख़दी (फलनी) तंग्यो।

20. बबुस केरस ख़ेल अस्सा केरस,
मंईयाद केरा पूँप तोक्खा केरा।

21. पूँप तोक्खा किरकी पेल्लो
ककड़ो लातनूं लाभोरकी

ककड़ो लातानूं धारमार मन्दी हो
ककड़ो लातानूं धार मार मन्दी।

22. करम तरा केरकय जों-ख़यो
लकड़ा लातानूं लोभोरकय-2;
ककड़ो लातानूं धार मार नन्दय हो,
ककड़ो लातानूं धार मार नन्दय।

23. पूँप तोक्खा किरकी पेल्लो,
लकड़ा लातानूं लोभोरकी-2;
लकड़ा लातानूं धार मार मन्दी हो
लकड़ा लातानूं धार मार मन्दी।

24. पूँप तोक्खा किरकी पेल्लो,
ककड़ो लातानूं लोभेरकी-2
ककड़ो परिमया ने निंग्गन छोड़ाबओ,
निंग्है जूड़ि जों-ख़स कोड़ा केरस,
ने निंग्गन छोड़ाबओ।

25. एका लेक्खा राँची सहर
तेलेंगय जींगोर जोंगोर-2
भल ए-रेन भल ए-रेन पन्डरू
तेलेंगय जींगोर जाँगोर-2।

26. चूतो पिटरीनूं सिन्दरी लग्गया
रस रसरअन चीं-ख़ोय
भला रस रसरअन चीं-ख़ोय;
जियन हथलाअय सहजःना पेल्लोन
रस रसरअन चीं-ख़ोय
भला रस रसरअन ची-ख़ोय।

27. एकैया कादंय अयो
पेल्लो करने निंग्दस बौड़ारआ लगदस;
अयोक रींधल दाल भात
बापक चुनल कनिया
राँचीती बरआ ची दो
तबे जुनू बेटा बिहा मनोन।

28. खूड़ी खूड़ी कादय सगरी खूड़ी कादय
पेल्लो खूड़ी अम्बके कला
पेल्लो खूड़ी अम्बके कला;
पेल्लो खूड़ीनूं गा अलखना डूंबी मनी
पेल्लो खूड़ी अम्बके मला
पेल्लो खूड़ी अम्बके कला
पेल्लो खूड़ी अम्बके कला।

29. एंदेर गे उड़न पड़न नन्दय
मला रओ बसुवा पेल्लो
तंग्है जूड़ि जों-ख़स गा
कुल्ला तुरू ओहारी नन्दस।

30. किचरिन चड़अय मों-ड़ान लदअय
औरे बोंग्गोय लोहोरदगा
निंग्हय जूड़ि जौं-ख़स किर्तआ कादस
डहरेनूं लैलगावःदस।

31. पद्दा पक्खेन्ता तू-सा पेल्लो ओतखी अम्बके कला
पिटरिन अट्टय सम सुन्दर चूतय;
मईया मनो होले अयो बओ रे
बबु मनोस होले बबा बओस।

32. गुचय कोय बःदन
चोतोर कोय बःदी
पिस जूड़ि बरके बःदी
पिसा जूड़ि बरके बःदी;
चूता हों चूतोत, खन्दरआ हो ख़न्दरोओत
अन्ती जनू घिया मनो।

33. अक्कुन जूड़ि चोतोर कोय बःदय
पिसा जूड़ि बरके बःदय
खंडियन अट्टोय बरकन झपओय
कुल्लाती ओहारी ननोय।

34. टोंकानूं चीतो कोय बःदय
मला भईया चोतोर मनोन रे;
पूँप लेक्खा किचरी सोना लेक्खा जिया
मला भईया चोतोर मनोय रे।

35. बिछरआ जूड़ि बिछरआ जूड़ि
बांहि एग्हैं ख़च्चरआ लगी हो
बांहि एग्हैं ख़च्चरआ लगी;
निंग्गन बिछरोओन जूड़ि
एग्हैं मने मला लग्गो रे
एग्हैं मने मला लग्गो।

36. बिछरआ भईया बिछरआ को
पुन ख़ोचोल भईया ख़चरआ लगी;
अयो हूँ मल्ला बबा हूँ मल्ला
धर्मे हूँ मला चोन्हा ननी;
ओहारो मलकर डिहारी मलकर

धर्मे हूँ मला चोन्हा ननी;
कुवार बारी अम्बयर की केरर
धर्मे हूँ मला चोन्हा ननी।

37. टुकु टरा-2 टिर छोकोड़ी
मे-तासिन पोसओय का मला कोय टिर छोकोड़ी-2।

38. करम बे-चो बीरि मल बरदय
जपी बे-चो बीरि गोनआ नन्दय;
मेन्द पेल्लो मनोय होले कुड़िया ख़ापोय
डिण्डा बेड़ा निंग्हय एंव उल्ला रओ;
गुचा कोय पेल्लो नाद ए-रा कालोत
डिण्डा बेड़ा रीझने बलदस बःदी।

39. करम डौड़ानूं पेल्लो कोय
बबु निंग्हैं चीं-ख़ा लगी हो
बबु निंग्है चीं-ख़ा लगी;
जौँ-खसिम तम्बस पेल्लोदिम तंग्गयो,
बबु निंग्हैं चीं-ख़ा लगी हो
बबु निंग्है चीं-ख़ा लगी।

40. छोटे बड़ा रहचकन ददा होय
ईगड़ी एन्देर केरा बआ लक्कय ददा होय-2
अक्कुगा ददा सुन्दर मुक्का बिद्दकय हरे
हरे ददा चाल मला ननदय हो
हरे ददा बोल मला नमदय।

41. चीतो कोय बासी मण्डी
बसियन ए-र गे कालोन हो;

बसिया रजी बरा मैर मंजा
बसियन ए-रा गे कालोन।

42. गंगेरा हँडिया कोय धिया गो
हरदी रंगाल पियार उटा पेल्लो रई;
कुसुम्बी हटिया कोय धिया गो
हरदी रांगल पियार पटा पेल्लो रई।

43. गुमला कादय राँची कादय डिगरी मनो का मला रे
मना गा मनो भईया दशो सय रूपैया लगो रे
बीसो सय रूपैया लग्गो।

44. गुमला पे-ठ कादय जूड़ि
चाँड़े किर्रोय का मला रे-2
किर्रा गा किर्रोन रे
जिया निंग्हा' एन धिरिजा ननाये रे
कया निंग्हा' एन धिरिजा मनोय रे।

45. हार भैर मनख़ा राँची चलान मंजा नयो
बबन डुबा बाचा रे ददा नासगोन डुवा बाचा
पईरी बीरि राँची चलान मंजा नयो
बबन डुबा बाचा रे ददा नासगोन डुबा बाचा।

46. छोटे छोटे अड्डो मनख़ा
चाईल केरा राँची सदर हो-2
पाँच भाई रःदर उइया मला कादर
नली दोवाल खचेरा लगी हो-2

47. बागरोय ख़ांसरोय पेल्लो
किचरिन एंव झलैर कूरोय हो;
जितिया टोंकानूं पेल्लो
किचरिन एंव झलैर कूरोय हो।

48. ख़ेलन अम्बा अस्सा भईयारे
एंग्गगे नड़ी कोरआ लगीरे
एंग्गगे नड़ी कोरआ लगी;
नड़ी अम्बो होले भईयारे
जितया ए-रागे कालोनरे
ज़ितया ए-रागे कालोन।

49. जितया जतरा खरमार लग्गया
ए-रागे कालोन हो
जतरा बे-चागे कालोन;
चितो कोय तिलसार पगन
जितया ए-रागे कालोन हो
जतरा बे-चागे कालोन।

50. जितया डांड़े खड़आ खैल पति मंजा
जितया ए-रागे कालोत हो, जतरा बे-चागे कालोत;
जोंख़ासिम तम्बस पेल्लोदिम तंग्गयो,
गुचा जूड़ि बे-चागे कालोत हो
गुचा जूड़ि बे-चागे कालोत।

51. कला धरमे कला, सतपटिया नालेनूं कला
छछेड़ा बे-चागे कला,
सतपटिया नालनूं भईया बहिन रानर,
गंगला झूंडनूं बेद्दा मो-ख़ा लगनर

उज्जा ओक्का लगनर।
भईया बहिन उज्जा ओक्का लग्गयर
ककड़ो लाता आर गहि डेरा कोय,
गंगला झूंडनूं बेद्दा मो-ख़ा लगियर कोय,
गंगला झूंडनूं बेद्दा मो-ख़ा लगियर
ककड़ो लानानूं नुखरआ लगियर,
हरमजदा चेरो बे-लस चानेम चानेम सेन्दरा
तईदस कोय,
चानेम चानेम सेन्दरा तईदस।

52. किवदी अयो-2 दिन सगर अयो किवदी रे,
रतिसगर अयो किबदी;
उरखोन दरा कालोन अयो
ई राजी मला बरओन रे
ई देशन देश मल बओन।

53. हरियारका कोड़ा केरकय,
मोखरारअ बरआ लगदय-2
जूड़ि पेल्लोन हियावाचकय
मोखरारआ बरआ लगदय।

54. कोरकोड़ा केरकय, मलम बरदय-2
हजारी बजारी जिया कलपारई।

55. किबदी नयो किबदी हो
दिनो सगर एंग्गन किबदी हो
राति सगर एंग्गन किबदी हो
माघे महिना बरआ ची तो नयोगे
गड़ी अरगोन कोड़ा कालोन हो-2

उज्जोन बिज्जोन होले चिट्ठी पतर तैयोन
खेओन होले सपेना तैयोन हो रे
सपेना तैयोन।

56. ओंद खण्ड किचरी गे
काल बहिन उइया गे बःदय ददा
काल बहिन उइया गे बःदय;
कोड़ा राजी कालोन तीन पड़ियन कूरोन
निंग्गन ददा ईरीखा ननोन हो
निंग्गन ददा ईरीखा ननोन।

57. बीसागा बीसकी अयो
तनी एकन पुल्लकी बीसारे
तनी एकन पुल्लकी बीसा;
साईस ससुर बिद्दकी,
देवर दाईज बिद्दकी,
जूड़ि समैर पुल्लकी बेद्दारे,
जूड़ि समैर पुल्लकी बेद्दा।

58. झमर झमर बे-चोत, झकामका बिलचो,
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2।

59. ख़े-ल ख़ें-दा कादय
ऊ-ख़ा माख़ानूं कादय रे
अम्बय केबय नासगो, अम्बय केबय भवाजी,
नदी नारा बिलचा लगी रे
नदी नारा बिलचा लगी।

60. हालमाटी बराडीह, बरा मला बसुवा

पतागई पेल्लो बरआ लगी रे
पतागाई पेल्लो बरआ लगी;
मला ईरदी पेल्लो छाएला सिंगारिया,
जूड़ो मैया परकला रई रे,
जूड़ो मैंया परकला रई।

61. बपपरिया भईया
बरेदामें का लादल आवय हो
बरेदामें का लादल आवय;
न लगे जीरा, न लगे धनिया,
कनिया लादल आवय हो
कनिया लादल आवय।

62. एका कुक्कोस कड़रू ख़ापदस
चेंड़ा कुक्कोस कड़रू ख़ापदस,
कुल्लानूं बकिला टईयारे
कुल्लानूं बकिला टंईयां;
चिओस बाच बाच हेद्दे-हेद्दे मनेन
चिओस बाच बाच हेद्दे-हेद्दे मनेन
कुल्लानूं बकली टंईयारे
कुल्लानूं बकली टंईयारे।

63. कल्ल-2 रहचकन जुग-2 रहचकन
ओन्द खंड़ा किचरिन बल्लेन रे
ओन्द खंड़ा किचरिन बल्लेन;
ओन्द सोड़ा मन्डी पंचे रूपैया डोलो,
जनमों ओरेइन चिःनय रे
जनमों ओरेइन चिःनय।

64. ओर्मर गहि एड़पानू झांईझ मान्दर ख़रख़ी
नम्है एड़पारे सुना मंजा हो
नम्है एड़पारे सुना मंजा;
बाढ़ल धिया मल्लर बाढ़ल पुतारे
नम्है एड़पारे सुना मंजा हो
नम्है एड़पारे सुना मंजा।

65. किचरिन बन्डी कूरय बःदन कोय
छिनार कंट्टे लां-ड़ा लगी हो
छिनार कंट्टे लां-ड़ा लगी;
पईरी पुतबीरि बन्ड़ी कूरय बःदन कोय,
छिनार घांसी लां-ड़ा लगी हो
छिनार घांसी लां-ड़ा लगी।

66. ख़ैं-सो-2 टोंका, डेम्बआ-2 कोदय
मोख़ारो गिठिया बिनु शोभय हो
मोख़ारो गिठिया बिनु शोभय;
झरन तुन्दोय ख़े-रन पिटोय,
झरन जब्बकय झारा ओनोय हो
झरन जब्बकय झारा ओनोय।

67. जोगीयारे जोगीया रन बने-2
एक गोटा बेटा लगिन राईज राईज भूलय
देशे देशे भूलय हो।

68. अक्कु परियन्ता चेंड़ा जोँ-खय
की-या जूड़ो मैंया पगा;
किर्र ए-रोय चेंड़ा पेल्लो
ए-रा-2 जिया साली हो
ए-रा-2 जिया साली।

69. डन्डूती खे़-ल बरआ लगी पेल्लो,
मैंना मंजूरा लेक्खा पेल्लो बरआ लगी;
किर्र ए-रोय चेंड़ा पेल्लो
मैंना मंजूरा लेक्खा पेल्लो बरआ लगी।

70. निंग्हय एंग्हय कोय दिल बसचा,
संगेम बरओय कालोत हो-2
ए-न जोँ-ख़ रओन नीन पेल्लो रओय
एकासे उल्ला मला कालो हो।

71. ओन्द बी-ड़ि लस्सा भर खोख़ा कस्सा,
हाए धरमें बुझूरकिन रएन-2
नीन एन्दरे ननोय ए-न एन्देर ननोन,
हांए धरमें ई दसा मंजा-2।

72. पईरी बीरि बरओर, अखड़ानूं बरओर,
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2;
खेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय
अबो बबा ए-रागे बरओर कोय-2;
गावा भईयर बरओर, पद्दा खेप्पर बरओर
पईरी बीरि ए-रागे बरओर कोय;
खेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय;
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2;
सोना गहि चिलपिन अत्तय,
रूपा गहि पीपर पतन अत्तय,
सोना गहि सिकड़िन अत्तय कोय
खोक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय
अयो बबा ए-रा गे बरओर कोय-2;
खेड्डनूं पएंड़न अत्तय,

डेब्बा खेक्खाती बेनयन धुकुरअय कोय-2;
तीना चोक्खनूं टंईरिन धरअय कोय,
गुच तो बुचु कालोन कोय अखड़ानूं बे-चागे कालोत,
अखड़न सोहान ननोत कोय;
खेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय,
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय।

73. चान चान कोड़ा कादय
जीना मरनन तेंग्गर कला
आधो राति भैंसा छोरय
भिनसरे भैंसा चरावय हो-2;
ठरकी का शब्दे नीन्दा नहीं आवय,
बड़े भिनसरे भैंसा छोरय-2।

74. बरतो बहिन बे-चागे कालोत कोय,
अयो बबा ए-रा गे बरओर कोय-2
खेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय,
अयो बबा ए-रा गे बरओर कोय-2;
सोना गहि टईड़ी, रूपा गहि बेनया?
बेनया थुकऊर भेजा बे-चोत कोय-2
सोना गहि कालिगन खोसअए बहिन गो,
पोकोल किचरिन कुरय बहिन गो,
बैइकला पेंछोन खेर्रोए;
खेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2;
पदम धोती ननोन बहिनगो,
तिलासार पगान ए-न हेओन,
बेनया धुकऊर धुकऊर भेजा बे-चोत कोय;
खेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय

अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2।
पईरी बीरि बरओर, अखड़ानूं बरओर,
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2,
ख़ेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2
गांवा भईयर बरओर, पद्दा खेप्पर बरओर
पईरी बीरि ए-रागे बरओर कोय;
ख़ेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2
सोना गहि चिलपिन अत्तय,
रूपा गहि पीपर पतन अतय,
सोना गहि सिकड़िन अतय कोय
ख़ेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय-2
ख़ेड्डनूं पएंड़न अतय,
डेब्बा खेक्खाती बेनयन धुकुरअय कोय-2
तीना चोक्खनूं टंईरिन धरअय कोय
गुच तो बुचु कालोत कोय अखड़ानूं बे-चागे कालोत,
अखड़न सोहान ननोत कोय,
ख़ेक्खन धरनागे ने एन्देर बओर कोय,
अयो बबा ए-रागे बरओर कोय।

75. चान चान कोड़ा कादय
जीना मरनन तेंग्गर कला
ओंटिम गोटा चिरो टिबसी
जीना मरनन तेंग्गर कला।

76. कोदय कसआ केरअन धियागो
का बेजाए नंज्जयन धियागो

का बेजाए नंज्जयन;
हाएरे मेत चंडाल धियागो
जता खिला डन्डाती लवचय धियागो;
लवआगा लवचय मईगो, उरखर बरआ बलदी मई,
बरआ गा बरओन यो हार भर अड्डों निंग्हैन होओर यो-2
होआगा होओर बिटी, पंचे रूपैया डाली जुनू होओर।

77. काला बरा पेकेड़े-2
ए-नगा मला हूँ रओन हो
ए-नगा मला हूँ रओन;
चटगा नू लवओय, मुटगाती लवओय,
ए-नगा जनमों मला रओन हो
ए-नगा जनमों मला रओन।

78. एका तरती बरचय, पंडरू सहेबर
नागपुरन कीरिसु नज्जय हो-2
कुक्क मुंडला खेसेर घाटो,
एड़ी भरि धोती नन्नय हो-2
डेब्बा खेक्खा छत्तर, तीना खेक्खा कलम,
एंड़ कलम हुरनय चिःनय हो-2।

79. कोंको भोंको पलाकी, जियन कलपी-2
मझी मनोय महतो, सगाई मनोय-2।

80. उरबर गहि तंगदा बन्ना किचरी कोय,
पचरी हेदो इज्जकी रई;
रांड़ी पच्चो तंगदा लेदरा किचरी
रझम रझमराः भेजा बीचि।

81. सिलागामी ससुरार यो
मला हूँ रओन-2; यो
कुईया केबरिन चिःनय-2।

82. भई कुकोय गुनिया बई,
पलकीनूं अर्गोन बई हो-2;
छांटेनूं सिन्दरी मनो होले
पालकीनूं अर्गोन बई हो-2;
छोटेनूं पाही मनो बीरि
पालकीनू अरगाचर चिचर हो-2;
तीन फेरा करसन किन्दराचर चिच्चर
पालकीनूं अर्गतःर किरतार ओन्दरर हो-2
छोटेनूं मिस्से मंजा केरा,
पालकीनूं अरगर चिच्चर हो
पालकीनूं बिदायो चिच्चर हो।

83. रतना सबना पचगिर कूम घाटी कमचर,
कूम घाटीनू कोय हीरा बझरा,
हीरा निंग्है कोय गिरगोनूं रई;
तेताली सोकड़ा नालनूं कोय हीरा बझरा,
हीरा निंग्है कोय गिरगोनूं रई;
ईज्जो बीसा केरकय रतना सवना,
एका लेक्खा भोको रहचकय,
ईज्जो बीसनूम गरीब मंज्जकय।

84. सुपली पेल्लो भईया रे,
कुम इचआ चलरआ लगी,
बान्धा पीं-ड़ि पीं-डि काली,
कूम ईचआ चलरआ लगी कोय;

दुबा घाँ-सीन ठूस पेल्लो
भोकड़ोन उटकोओय, जिनो ईज्जे हेलरआ लगी,
जिनो ईज्जो हेलरआ लगी,
ईज्जो ईज्जोन इरित कोय,
ककड़ोन हेबड़य ची कोय।

85. हाएरे एंग्हैं बिपत हाएरे-एंग्हैं खिलपत
कुकोय बारि रांड़ि मंजकन हो-2।

86. बारी बरंडो बरचा कोय,
भईयासिन उड़ियाः लगी;
अरजी बिनती ननय कोय पेल्लो,
भईयासिन धरमेस किरतोओस कि चिओस।

87. चो कोय रांड़ी पच्चो तंगेदा,
चो कोय चुंजा लस्सा कादी का मला;
कोम अड़खा मो-ख़दी, बोड़ो लेक्खआ ख़ंदरदी,
चो कोय चुंजा लस्सा कादी का मला।

88. उरबर मंजर, कीड़म मंजर,
कीड़र मंजर, उरबर मंजर,
तम्है करनी तुरू कीड़म मंजर,
कीड़र तम्है चलन तुरू उरूब मंजर।

89. कोहा ख़ई बारिया आंतरी गड्डीनू
जिनों दिम जिनो, अंगरी बीनओ,
सन्नि ख़ई बारिया लाता लोपआनूं
मगरा दिम मगरा, अंगरी बीनओ।

91. गोला अड्डो जनम रे लण्डी
नाल नम्हय मरेचा रई
गोला अड्डोन बीसोन मनेखा ख़ें-दोन
नाल नम्हय चोतोर मनो।

92. अक्कु पुरे जों-ख़य कुक्क मुंडला घटो ख़ेसेर
एड़ी भरी धोती नन्नय;
तीना ख़ेक्खानूं बागिरका धरनय
डेब्बा ख़ेक्खानूं अएना धरनय
चेने मेने बागरनय;
तीना ख़ेक्खानूं कलम धरनय
डेब्बा ख़ेक्खानूं कगज
रिगी बिगी लिखनय।

93. बिछिरआ को बिछिरआ जूड़ि
बहिद एं-ग्गहय ख़च्चरआ लगी
बहिद एं-ग्गहय ख़च्चरआ लगी;
बिछिरआ गा बिछिरओन जूड़ि
हाएरे एंग्हय दसा दिन मल्ला
हायरे एंग्हय दसा दिन मल्ला।

94. चान चान कोड़ा कादय
जिना मरनन तेंग्गर कला-2;
हरियारकय कोड़ा केरकय
मोखरारकय बरआ लगदय-2।

95. उइया कादय उइया बलदय
ढिचुवा पड़गआ लगी हो-2,
पईरी बीरि उइया कादय हो
ढिचुवा पड़गआ लगी।

96. भले नन्दी गो नन्दी एंदेर नन्दी
एंदेर भला खद्दिन तंग्यो ख़े-रन हूं पिटिया;
झोलउर हूं मलकर मोंचुर हूं मलकर
गल्लेन कप्पा चौं-ख़दी।

97. भला निंग्गन ददा बआ लक्कन को
धरमे ई दसा नन्जा
नीन एका गुसन को ए-न एका गुसन;
धरमे ई दसा नन्जा
पईरी पुत बीरि ददा बआ लक्कन को
नीनिम पुरूखा मंजकय।

98. आन कोंय रण्डी पच्चो तंगदा,
को-म अड़ख़न मो-ख़दी
घोड़ो लेक्खा खँदरदी, चुंजा लस्सा बलदन बःदी
पईरी बीरि को-म अड़खन मो-ख़दी
घोड़ो लेक्खा ख़ंदरदी, चुंजा लस्सा बलदन बःदी।

99. खे-ल खोटोरका ढिबन चाँडे ची कोय
जौँ-ख़र खरम धिराबःनर;
चेंडा चेंड़ा जौँ-खारिम पैक लगाबःनर
पचगी जौँ-ख़र ख़ों-ख़ा तरा बरनर।

100. राजीनूं कोय चैं-पा गा पुंईया
नामगुसन मला मला ननी
नमगुसन मला मला ननी;
नीन पुरब तरा एन पछिम तरा,
धर्मे ई दसा नन्जा,
नीन पेल्लो ए-न जौँख रओन

जोगा जोगी उल्ला दिम कालो
जोगा जोगी उल्ला दिम कालो।

101. नयो गे गुंगू बसा गे कुल्ला
कुल्ला ती रोआ इदआ मल बनई
बिज्जा पुत्ता चैं-पा गा पुंइयी;
ए-न एंदेर नगोन नीन एंदेर ननोय
धर्मे ई दसा नन्जा, नमा ने मण्डी चिओ;
ख़द्दासिन ए-रेन ख़द्दन हों ए-रेन
एनिम एदेर ननोन
तम्बस हों केरस
ख़द्दर हो कलवलरनर।

102. चरियो कौं-ड़ा चैं-प गा पुंइयी;
नम गुसन इकलअम मला पुंइयी
एंदेर गे चैं-प इकलअम मला पुंइयी
बदाली इकलअम मला मुर्री
एंदेरगे बदाली इकलअम मला मुर्रदी;
मूँ-खा इकलअम मला चीं-ख़ी
डोंडो नुलखा गेम बिद्दी।

103. गुच कोय पेल्लो नाइ ए-रा कालोत
डिण्डा बेड़ा निंग्हय एंब उल्ला रओ;
जौं-ख़ मेत्त कोय गुंगू कमआ बल्ली
पचवा आल गुसन कालोय
पचवा आल गुसन कालोय।

104. कू-ल की-ड़न बुझुरकी कोय अंगलो पेल्लो
अंगलकी र:दी

पईरी बीरि कोय अंगलो अंगलकी र:दी;
कुहुड़ कुहुड़ उइया कादन कोय
दलय दलय अम्म हो:के कोय
कड़मानूं बे-क मरचा;
पईरी बीरि उइया कादन कोय
अड़ती बीरि अम्म हो:के
अम्म संग्गे मण्डी हो:के कोय
कड़मानूं बे-क मरचा।

105. काहू रे ख़ाख़ा खेस्सन एंग्हाएन मो-ख़दी
काहू रे ख़ाख़ा गुड़लुन एंग्हाएन मो-ख़दी;
खेदआ कोय मैं गो बारहोय हाथ डांग ती
खेदआ कोय मैं गो तेरहय हाथ डांग ती
खेस्सन एंग्हाएन मो-ख़ी;
खेदआ कोय खेदआ मैं बारहोय हाथ डांग ती
खेदआ कोय खेदआ मैं तेरहय हाथ डांग ती
बारहय हाथ डांग ती;
ईरकीदिम खेदआ तेरहय हाथ डांग ती
निनकीदिम खेदआ।

106. काहू रे ख़ाख़ा काहू रे ख़ाख़ा
गुड़लुन मो-ख़दी गुड़लुन मो-ख़दी
सोना गहि टंईड़ी रूपा गहि मंची
ओक्कोन अरा खेदओन।

107. अक्कुन अयो कोड़ोय
अक्कुन अयो केबोय
अक्कुन अयो एकसन कालोन;
माघ महीना बरआ चीतो अयो
गड़ी अरगोन कोड़ा कालोन।

108. पियो पियो बःदी पियो गे ने चरा चिओ
भाई मल्ला बंग मल्ला
पियो गे ने चरा चिओ।

109. हुका ची कोय चिलम ची कोय
तनी एकन सुरती ची कोय;
साईस ससुर एड़पा
तला कुंजी लगिया
हड़कानूं तमाकू रई।

110. इदना मदगी बरचा नासगो
खोपा मुलका बेसे एथेरई रे;
पईरी बीरि किर्र ए-रय नासगो
खोपा मुलका बेसे एथेरई रे।

111. नीन कोय पेल्लो केवेरना पेल्लो
मुनगा तोक्खागे कादी रे;
हेओर की लवओर कोय पेल्लो
जिया काना बेसे लग्गो कोय
कया काना बेसे लग्गो।

112. छोटे एकन रःदन ददा होय
एंग्गन अम्बके बीसा ददा होय अम्बके बीसा
निंग्हय चाली बलिनूं ददा होय;
चुंजोन बे-चोन ददा होय कें-सोन बे-चोन
सोना लेखे बीसोय ददा होय
रूपा लेखे ओन्दोरओय मंखोय हो।

113. ईन्दे बे-चा कालके भाई रे
दसई बे-चा अम्बके काला हो
दसई बे-चा अम्बके काला;
गोल्लर बे-लर खरा पपी रःनर
दसई बे-चा अम्बके काला।

114. नन तरता जौन्दख़द्दिस
ए-रा खने मोजेरा नन्दस,
पद्दाता जौन्दख़द्दिस
अड्डे दुरू ए-रदस चोक्खो दुरूम ए-रदस।

115. गंगा हेद्देन्ता बंगाली पेल्लो
ढिंकी चुंजा बलदन बई;
पईरी बीरि बंगाली पेल्लो
ढिंकी चुंजा बलदन बई।

116. बीची बीची बःदी अयो
बे-चेन तो जियन भुलाबएन;
पाड़ी पाड़ी बःदी अयो
पाड़ेन तो जियन भुलाबएन।

117. चोअय धिया एंवदम ख़न्देरदी
पेल्लर पूंप ख़ट्टा बरचर-2;
अगे अगे जौँ-ख़र ख़े-ल अस्सा लगनर
ख़ो-ख़ानूं पेल्लर पूँप खट्टा लगनर।

118. नन्नर घी मण्डी इड़ी भैर धोती
फुलै भईया अम्बके मना;

निंग्हय पतरी मनो होले
फुला निंग्हय बेंड़ारओ कालो।

119. कबसी कोड़आ केरअन अयो
कबसी ने-कन केबा लगी;
साईस पिंधे आईर पाईर
पुतौ पिंधे सदा
अयो मने में रहल।

120. पियो पियो बःदी पियो गे ने चरा चिओ
भाई मल्ला बंग मल्ला
पियो गे ने चरा चिओ।

121. हुका ची कोय चिलम ची कोय
तनी एकन सुरती ची कोय;
साईस ससुर एड़पा
तला कुंजी लगिया
हड़कानूं तमाकू रई।

122. इदना मदगी बरचा नासगो
खोपा मुलका बेसे एथेरई रे;
पईरी बीरि किर्र ए-रय नासगो
खोपा मुलका बेसे एथेरई रे।

123. नीन कोय पेल्लो केवेरना पेल्लो
मुनगा तोक्खागे कादी रे;
हेओर की लवओर कोय पेल्लो
जिया काना बेसे लग्गो कोय
कया काना बेसे लग्गो।

124. छोटे एकन रःदन ददा होय
एंग्गन अम्बके बीसा ददा होय अम्बके बीसा
निंग्हय चाली बलिनूं ददा होय;
चुंजोन बे-चोन ददा होय के-सोन बे-चोन
सोना लेखे बीसोय ददा होय
रूपा लेखे ओन्दोरओय मंखोय हो।

125. इंदे बे-चा कालके भाई रे
दसई बे-चा अम्बके काला हो
दसई बे-चा अम्बके काला;
गोल्लर बे-लर खरा पपी रःनर
दसई बे-चा अम्बके काला।

126. अना निंग्हाएन धना निंग्हाएन
बुड़ा बाचा सुन्दरी पेल्लो;
मुक्का निंग्हय गेदेल गेसआ
बुड़ाबाचा सुन्दरी पेल्लो।

127. पईरी बीरि दइगो
चेनखो बरई दइगो,
बरआ लगी बरआ लगी
हाथा जोरी बिन्ती हूँ ननोय।

128. पूँप तोक्खा केरअन अयो
नीदी डौड़ा बरआ लगेन;
ओन्दा बिटी पूँप बओर होले
एन्दरन चिओन एन्दरन मला।

129. जतरा बे-चा केरअन अयो
मण्डी बिच्चा का मला;
बिआ गा बिच्चा बिटी
तेताली पलेवा रई।

130. बीच डांड़े लड़ाई चो-चा
कला महतो बाते ननय
बाते ननोय चिते ननोय
बहिन धरओय लिखओय पढ़ओय।

131. भेज्जा बे-चा गे लोभोरकय भईया
अड्डो मनख़ा उलम रई;
पईरी बीरि लोभोरकय भईया
अड्डो मनख़ा उलम रई।

132. गम्भिरया पेल्लो कुकोय
तेताली मूलीनूं लड़ाई बड़ी ननी,
तेताली मूलीनूं लड़ाई बड़ी ननी;
कोड़ा राजी कालागे तेताली मूलीनूं रय बड़ी ननय
हरे तेताली मूलीनूं रय बड़ी ननय।

133. किर्रा किर्रा ददा उइया अम्बा कला ददा
कला हो रायमुनी कला;
किर्रोय होले लेवा लुँडा ननोत
पछली बरखा रई हरो
पछली बरखा रई।

134. खेंं-ल खेंदा केरकय ददा
बला हूँ खिंदकय

पांच धारन अत्तोन चार धन उइयोन
बला अत्तोन तबे मण्डी ख़ोल्लोन।

135. गुड़मुड़िया पेल्लोगे कनडा डनडे बरआ लगी,
चुक्का चुक्का ढिबा नेअय कोय
कनडा डंनडे बरआ लगी।

136. नीन भईया कोड़ा कादय जतेरा बरआ लगी
ने गने भेज्जा बे-चोत;
पईरी बीरि कोड़ा कादय जतेरा बरआ लगी
ने गने भेज्जा बे-चोन।

137. सुबैरे गुंडा छाएलाही पेल्लो
ख़ेसेर हेद्दे चिलिपी रई;
ए-रा ए-रा पाही ननोय
ख़ेंसेर हेद्दे चिलिपी रई।

138. उर्बर घी तंगदा सड़ी बन्ना किचरी
आगे आगे भेज्जा बीची हो;
रंडी पच्चो तगदा लेदेरा रे खेदेरा
कूटी चवड़ानूं बीची हो।

139. टोनटो रे खटेंगा अम्बय बीसय अयो
घाँसी छोलनुम उल्ला काली रे;
जाना रे जिरिंगा अम्बय बीसय अयो
परेता मैंया जिया रई रे-2।

140. जनम जनम कोड़ा कादय नीन
जिना मरनन तेंग्गर कला रे-2;

ओंदिम गोटा जिया बुझुरआ
जिना मरनन तेंग्गर कला रे-2।

141. परेता राजी बीसोय अयो
को-म अड़खा लुदुम लुदा रई रे-2;
दरहा राजी बीसोय अयो
फुटलगो चोप्पो इंज्जो रई।

142. नीन भईया सन्नी भईया
बे-ल भरिया नीन अम्बोय काला;
बे-ल भरिया ढिबा पैसा
बे-ल भरिया नीन अम्बोय काला।

143. असाड़ सावन चैंप पूंइयी
एंदरा हों मला ख़े-ख़ेल नूं;
एंव कोड़हे खाड़ बरआ लगी
खाड़न कट्टा गे पोल्लोत।

144. ए-न मला कओन चेड़आ भरिया
ए-न मला कओन कोय कुम्मा भरिया;
जौं-ख़ासिन तैयोय चेड़आ भरिया;
पेल्लो निंग्हाएन तैयोय कुम्मा भरिया;
जोड़ा जोड़ा कालोन चेड़आ भरिया
जोड़ा जोड़ा कालोन कुम्मा भरिया।

145. कालो बीरि ईरकन खयका खाड़
किर्री बीरि ओंदिम खाड़ निन्दया;
ओंदा से केंबआ एंग्हय सोना गहि मुद्दिन चिःदम
एंग्गन कटतअर चिआ
मला होओन मुद्दिन निमन कटतोओन।

146. बोंग्गय पेल्लो नईहर कलय
नयो दुलार निंग्हय एंव उल्ला रओ
नयो दुलार निंग्हय एंव उल्ला रओ;
मलम रओय पेल्लो नड्डो खेड्डल कालो
पंचे रूपैया डली एब उल्ला रओ
नयो दुलार निंग्है एंव उल्ला रओ;
नीन पेल्लो रओय, ए-न जौँ-ख रओन
नयो दुलार निंग्है एंव उल्ला रओ
नयो दुलार निंग्है एंव उल्ला रओ।

147. गुच बिजोली कुकोय
चटी ईन्दे खरा रिझ लग्गी;
पईरी बीरि कओन कोय
चटी ईन्दे खरा रिझ लग्गी।

148. ओरमारिन नयो बबा ए-रा ए-रा बीसकय
एंग्गन नयो बबा बनरेसम बीसकय हो;
ओरमर गहि जूड़ि झला रे फुला
एंग्हय जूड़ि नयो बबा झकम झैरा हो-2।

149. गुच पेल्लो कालोन कोय
राजी ए-रा कालोन
देशा ए-रा कालोन;
अयो बबा एड़पानूं रओर
नाम पेल्लो राजी ए-रा कालोत कोय
नाम पेल्लो देशा ए-रा कालोत।

150. हरे एंग्दन बँडी पेल्लो बःनर
अड्डा जगहा लग्गो का मला;
हरे एंग्दन बँडी पेल्लो बःनर
तंगदा गे कोड़े चौंर झपआ लगनर।

151. हाएरे राजी की-ड़ा-2
कटे मन्नन धजा हें-चा;
टुंड़सिन धरओय कोम अड़खन तोक्खा कओय
हाएरे की-ड़ा एंव उल्ला रओ हो-2।

152. नम्हैं चाली बलिनूं ददा,
कोकरोंएचो लाली गेन्दा पुंईदा
पुंईदाः चीतो कोय बहिना,
ने तोक्खोर आरिन धरओर।

153. पद्दानूं ससुरार, पद्दानू नईहार,
कादय बरदय का मला हो;
उन्दुल केरकन खे़-र मला पिटयर,
औलतिम जनम मला कादन हो।

154. हाएरे एंगदा झुबुलझुबुल
हाएरे एंगदन मला चिओन तिरकीयागे;
तिरकीया तिरियो ती ठगनर,
मुरली ती ठगनय,
ए-न मला चिओन तिरकीयागे।

155. अम्बा चीं-ख़ा भईया-2
निंग्है जहाज समुद्रनूं छेक्करा हो
निंग्हय जहाज गस्सानूं छेक्करा;
न एंगा नयो न एंग्गा बबा;
काका पितया परछअर ओन्दरर हो।

156. चीतो कोय बःदन चोतोर बःदी
पिसा जूड़ि बरके बःदन;
बरआगा बरओन एकसन रओन,

कोरोंजो मूलीनूं रओन;
कोरोंजो मुलीनूगा जोरो मनी,
तेताली मुलीनू रओन।

157. रांड़ी पच्चो तंगदाः लेदरारे चेथरा,
कुटि-2 भेज्जा बीचिरे
लझर-2 भेज्जा बीचि
उरबर गहि तंगदा पार बन्ना किचरी
आगे-2 भेज्जा बीचिरे
आगे-2 भेज्जा बीचि।

158. बर बहिन बे-चोत कोय
अयो बबा ए-रागे बरओंर हो
अयो बबा ए-रागे बरओर;
माख़ा बीरि नेहूं मला ईरयर,
उल्ला बीरि अयो बबा ए-रागे बरओर हो
अयो बबा ए-रागे बरओर।

159. हाए एंगदा भेजोली-2
एका गुसन भेज्जा बे-चो रे
एका गुसन भेज्जा बे-चो;
चिरा चिल्पी मैंना जूड़ो
आस गुसनिम भेज्जा बे-चो रे
आस गुसनिम भेज्जा बे-चो।

160. छोटे बड़ा डीबो पेल्लो कोय
रिम रिम रअन भेज्जा बीचि हो
रैया रतन भेज्जा बीचि;
कड़मानूं जड़ा बन्ना

ख़ेसेरनूं हंसली कोय
रिम रिम रअन भेज्जा बीचि।

161. तनी बड़ा रःदन बबा अम्बके बीसा,
निंग्है चाली बलिनूं ददा
चुंजोन ददा केंसोन बेंचोन।

162. उइया कांदय कुद्दय का
नम्हैं नाल मरचा रई।
जम्बू झरिया केड़ा झरिया,
नम्है नाल मरचा रई।

163. अनाको झारी लेबरे
गोड्डा निंग्हय मुरदा लगी;
लेसेर लेंसेर बोड़ए ओन्दय
गोड्डा निंग्हय मुरदा लगी।

164. नासरोन अम्बा नासे नना
बिजो बारी भेज्जा बे-चोत;
तीना बरा मुरची कोंचो,
बिजो बारी हेलरआ लगी।

165. आलर घी अड्डो, आलर घी मनखा
अरची पन्ना तुरू मएरोन रे-2
हाए निंग्हय कपार किसमैत
अड्डो मला मनख़ा रई।

166. छोटे बड़ा कुकोय चलको ख़ो-या केरा,
बैंड़म पईझ लथआ लगी हो;
ख़ो-ख़ा तरा ताँतर आगे तरा चलकी,
मंईया कुकोय धुकुरनुम बरई।

167. निंग्है लेक्खा बेद्दोन बाचकन
हरे जूड़ि पोलकन बेद्दा;
कुक्कन ए-रदन झमक झौड़ा
मे-दन ए-रदन खसम खौड़ा
हरे जूड़ि निंग्है लेक्खा पोलकन बेद्दा।

168. जूड़िस करने अयो बला पंयड़न ख़ोट्टा लगेन
सइयासिन ए-रेन ख़न्नजलखो खतरई
जूड़िसिन ए-रेन जिया साली।

169. बरतो बहिन बे-चोत कोय
अयो बबा ए-रा गे बरओर
अयो बबा ए-रा गे बरओर;
माख़ा माख़न्तन ने ईरयर
पैरिनतन अयो बबा ए-रोर।

170. चक चकरआ बिन्डो खोपा
जूड़ि पेल्लो हिलरआ लगी हो
जूड़ि पेल्लो हिलरआ लगी;
तीना डेब्बा नमारू पेल्लो
जूड़ि पेल्लो हिलरआ लगी
ने-कन धरओन ने-कन अम्बोन
जूड़ि पेल्लो हिलिरआ लगी।

171. हू पेल्लो का लगी भईयारे
डहरेन्ती नन तरा काली हो;
कला तो को भईया किर्तआ ओन्दरआ
मना बःके बुझाबःके
पुतबीरिम बरचा पैरिन एंदेर गे काली।

172. निंग्गन कोय पेल्लो ककड़ो परिमया
निंग्गन पेल्लो ने छोड़ाबओ कोय
निंग्गन पेल्लो ने छोड़ाबओ;
निंग्ग मेन्तस कोड़ा राजी केरस
निंग्गन पेल्लो ने छोड़ाबओ
जिया जियानूं चीं-ख़ोय ओलखोय
निंग्गन पेल्लो ने छोड़ाबओ कोय।

173. पूँप तोक्खा केरअन अयो
झरिया झरिया तोक्खा केरअन
कीया तोक्खा बाचा
मैंया तोक्खा बाचा
बला नदी छेकरअन केरअन;
पूँप तोक्खा केरअन अयो
निदी डौड़ा बरआ लगी
ची बिटी पूँप बओर होले
एंदरन चिओन एन्दरन मला।

174. अयो बबा बिदका मुक्का
बाड़ जबर जनिया हो-2
अपन बिदका मुक्का लली गुंजार पेल्लो रई हो
लाली गुंजर पेल्लो रई।

175. किम किमाड़ो किमाड़ो नाल किमाड़ो
जौं-ख़यगे सिरोंग सोटोंग, पेलएगे नाल किमाड़ो।

176. नीन पेल्लो झकमकरदी
निंग्गन पेल्लो बेंजेरओन बःदन;

सय लग्गो पचास लग्गो
निंग्गन पेल्लो बेंजेरओन बःदन।

177. रंडी पच्चो तंगदा बड़ा लंगचंगिया
टोंगोरी चढ़लैं हांक देलैं हो-2
एको हंकन हंकय दुयो हंकन हंकय
तीनो हंकन छाएला पहुंचय-2।

178. नगपुरिया चेंडा पेल्लो
दार्जिलिंग डोको कुम्मा चलरआ लगनर हो;
कुक्क मैंया लमलो मे-द मैंया डोको
घुमारी घुमारी पतई तोरय हो।

179. खे-ल खें-दा कादय भटू
बबा पिण्डी पिण्डी कादय हो-2;
अम्बा कला भटू अम्बा कला दीदी
नदी नला बिलिचा लगी हो।

180. झैल पर्तानूं भईया रे
हाथी अरेगा लगी,
अरेग चिआ अरेगा चिआ रे,
देशेन ए-रा अरेगा लगी
राजिन ए-रा अरेगा लगी।

❋ ❋ ❋

परिचय

नाम : डॉ. नारायण भगत

जन्म : 16.10.1959

जन्म स्थान : भलदम चट्टी, पोस्ट-असनी, जिला-गुमला।

पिता : स्व. गन्दुर भगत

शिक्षा : प्राथमिक विद्यालय केशीपारा, गुमला, बी. कॉम-गोस्नर महाविद्यालय, राँची, एम. ए.- कुँड़ुख़ (उराँव), राँची वि.वि.,राँची, स्वास्थ्य एवं जनसंख्या शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा-राँची वि.वि., एल. एल. बी. (प्रथम भाग)-राँची वि.वि., पीएच. डी- "छोटानागपुर के उराँव रीति-रिवाज"-राँची वि.वि.।

अन्य कार्य : आकाशवाणी राँची से उराँव वार्ता, लोक गीत, कुँड़ुख़ भाषा में समाचार वाचक, पूर्व सचिव- कुँड़ुख़ भाषा प्राध्यापक साहित्य परिषद् राँची, सचिव-कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा टेक्स्ट बुक कमिटि, झारखण्ड राँची, कुँड़ुख़ भाषा साहित्य परिषद् राँची, पूर्व सदस्य - कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इंडिया, झारखण्ड चैप्टर।

प्रकाशित पुस्तक : छोटानागपुर के उराँव रीति-रिवाज, नानी गही मानी ख़ीरी, ख़द्दी (सरहुल), भरिया (कुँड़ुख़ नाटक), सिन्दरी (कुँड़ुख़ उपन्यास), पुरखा कत्थ डण्डी, पुरखा गढ़े, साहे डण्डी, इन्नेलता कुँड़ुख़ ग्रामर।

प्रकाशित लेख : पझरा, आदिवासी, सरना फूल, बिज बिनको, झारखण्ड दर्पण, निस्कलंका, कुँड़ुख़ डहरे, एजर'आ, देशज अधिकार, श्रद्धा, फग्गु चन्द्दो एवं ख़द्दी चन्द्दो आदि में लेख।

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokha@yahoo.com

ISBN : 978-93-85595-59-2

978-93-85595-59-2

मूल्य : 150.00 रू.